श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा | श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः | जय गुरु मान

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रत्नम्

वर्ष-2, अंक-45 | 15 दिसम्बर, 2020 | जोधपुर (राज.)

हिन्दी पाक्षिक | पृष्ठ-40 | मूल्य 5/- प्रति अंक

RNI No. RAJHIN/2015/66547

समर्पण का भाव

सेवा, समर्पण, विनय, श्रद्धा- ये जहाँ हों, जिनमें हों, वे गुणी व्यक्ति दूसरों के गुणों को देखते हैं। जिनमें गुण नहीं, अपितु कमियाँ और दोष हों, उनकी नज़र दूसरों के गुणों पर नहीं, उनकी कमियों, उनके अवगुणों और दोषों पर ही जाएगी, परन्तु गुणी की नज़र अपने अवगुणों पर जाती है। सागरमलजी महाराज कहा करते थे-''मुझसे न तप होता है, न ज्ञान-साधना। एक उपवास करता हूँ तो पित्त पड़ने लगते हैं, गले में काँटे पड़ जाते हैं। दूसरा उपवास तो कर ही नहीं पाता हूँ।'' तप शरीर की अनुकूलता से होता है, पर उनकी शारीरिक अवस्था तपाराधना के अनुकूल नहीं थी। ज्ञान-साधना में भी क्षयोपशम मंद था। पाँच गाथा वे पूरी याद नहीं कर सकते थे, पर अपने एक गुण से ही उन्होंने अपने जन्म व जीवन को सफल बना लिया और वह गुण था- गुरु के प्रति समर्पण का भाव।

-'हीरा-प्रवचन-पीयूष (भाग-5)' से साभार

अध्यक्ष की कलम से

श्रीयुत् रत्नबन्धुवर / बहिन
सादर जय जिनेन्द्र !

श्रावक जीवन में उत्तम मार्ग संघ सेवा भी है जो कर्म निर्जरा का साधन है। चतुर्विध संघ से श्रावकों को सेवा का अवसर प्राप्त होने के कारण से श्रावक संघ तथा सभी श्रावकों के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है। श्रावक जीवन में की गई सभी धार्मिक क्रिया व तपस्या, संत जीवन के एक दिन की बराबरी नहीं कर सकता हैं। अतः श्रावकों / श्राविकाओं के लिये संघ सेवा ही उत्तम मार्ग है। संघ सेवा के लिये समर्पण आवश्यक है। बिना समर्पण सेवा असंभव है। समर्पण के संकल्प के पूर्व स्वयं को जानना आवश्यक है। हम हमारा नाम, जाति, धर्म, क्षेत्र को जानते हैं। किसी का नाम, जाति, धर्म, परिवार से व्यक्ति के शरीर का परिचय हो सकता है, परन्तु व्यक्ति के व्यक्तित्व व चरित्र का नहीं। शरीर का परिचय नश्वर हैं। शरीर के समाप्त होने के पश्चात मनुष्य के नश्वर परिचय का कोई महत्व नहीं होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व / चरित्र का परिचय स्थाई है। महापुरुषों के शरीर के परिचय को नहीं, गुणों को हमेशा याद किया जाता है। जाति से जैन होने का भी तब तक महत्व नहीं जब तक कि कर्म से जैन नहीं हो। कर्म से जैन होने के लिये संघ के प्रति समर्पण होना आवश्यक है। समर्पण के लिये संकल्प होना भी आवश्यक है, संकल्प के लिये विश्वास होना आवश्यक है, विश्वास के लिये ज्ञान होना आवश्यक है, ज्ञान प्राप्त करने के लिये संयम आवश्यक है तथा संयम के लिये विनय होना आवश्यक है। संयम के लिये निव्यर्सनी होना भी आवश्यक है। व्यसन संयम समाप्त करता है। संयम से विचारों की परिपक्वता प्राप्त होती है। निव्यर्सनी विनय से ज्ञान को स्वीकार करने की क्षमता प्राप्त होती है।

अनेक विचारों को जानने के लिये सत्संग आवश्यक है। अनेकों विचारों पर विचार करना ''अनेकांतवाद'' है। अनेकों विचारों पर विवेक पूर्ण विचार कर सार को स्वीकार करने से ज्ञान की वृद्धि होती है। ज्ञान प्राप्त किये बिना धर्म नहीं और धर्म बिना मोक्ष नहीं।

इन सभी विशेषताओं को प्राप्त करने के लिये संघ की शरण आवश्यक है। जिन्हें इन विशेषताओं के महत्व का ज्ञान होता है उन्हें चतुर्विध संघ के प्रति समर्पण के लिये प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है, समर्पण स्वतः हो जाता है। संघ समर्पण स्वतः संकल्प बन जाता है। स्वतः प्राप्त समर्पण, संकल्प मोह रहित उपलब्धि है। इससे कर्म बंधन नहीं होता है। कर्म दोष रहित संकल्प पूर्वक समर्पण मोक्ष मार्ग है।

17 अक्टूबर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का स्थापना दिवस था। किसी भी संघ का स्थापना दिवस, संघ के सम्पूर्ण पुनर्मूल्यांकन का भी दिवस होता है। संघ के उद्देश्यों तक का पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता हो तो भी किया जा सकता है। पुनर्मूल्यांकन करना, संघ के सजीव (लाईव) व गतिशील (डाईनेमिक) होना प्रमाणित करता है। संघ के उद्देश्यों, संगठन, कार्य प्रणाली आदि

के प्रावधानों पर विचार कर उनको समय अनुरूप होना घोषित करना या उचित संशोधन करना, संघ सदस्यों मे दुगने-चौगुने उत्साह का संचार कर सकता है।

संघ के विधान के निर्माण में योगदान देने वाली विलक्षण प्रतिभाओं को परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज साहब के आशीर्वाद का लाभ मिलने से संघ का विधान विशेष विशेषताओं से भरा हैं। संघ स्थापना दिवस पर मैं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के विधान के कुछ तथ्य व अनेकों विशेषताओं में से कुछ विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का गठन वर्ष 1975 में लम्बे विचार-विमर्श के पश्चात् हुआ। संघ के विधान का पंजीयन, वर्ष 1983 में करवाया गया है। संघ के प्रथम अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री सोहननाथ सा मोदी रहे है। विधान के अनुसार संघ अध्यक्ष व संघ पदाधिकारियों व कार्यकारिणी का कार्यकाल 3 वर्ष का होता है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ प्रगतिशील है। संघ की सर्वोच्च सत्ता आम सभा में निहित है। अतः विधान संशोधन का अधिकार संघ की आम सभा में निहित है। संघ विधान में संघ की आम सभा द्वारा लगभग वर्ष 1996 में संशोधन कर संघ अध्यक्ष व पदाधिकारी का कार्यकाल अधिकतम दो कार्यकाल अर्थात् अधिकतम 6 वर्ष तक सीमित कर दिया गया, जिससे कि नये नेतृत्व व नये विचार के अवसर प्राप्त होते रहे हैं।

संघ का संगठन अत्यंत विशाल व बहु-आयामी (मल्टी टीयर) है। संघ विधान अनुसार संघ में संरक्षक मण्डल, शासन सेवा समिति, साधारण सभा, कार्यकारिणी व संचालन समिति है। संरक्षकगण व शासन सेवा समिति मिला कर संघ संरक्षक मण्डल बनता है। संघ अध्यक्ष का चुनाव नहीं हो कर मनोनयन किये जाने का प्रावधान मेरी राय में, संघ के गठन को उत्तम व्यवस्था प्रदान करता है। संघ अध्यक्ष का मनोनयन संघ संरक्षक मण्डल द्वारा किया जाता है जिसे आम सभा द्वारा स्वीकार किया जाता है। संघ के अध्यक्ष द्वारा अन्य पदाधिकारियों का तथा कार्यकारिणी में सदस्यों को मनोनीत किया जाता है। संघ की विभिन्न राष्ट्रीय सहयोगी संस्थायें व ट्रस्ट कार्यरत है। सम्पूर्ण भारत में संघ की अनेकों स्थानीय शाखायें है। स्थानीय शाखाओं के स्थानीय अध्यक्ष का मनोनयन स्थानीय स्तर पर होता है। स्थानीय संघ अध्यक्ष द्वारा स्थानीय पदाधिकारी व कार्यकारिणी का गठन कर अन्य पदों पर नियुक्ति की जाती है। सभी स्थानीय संघ अध्यक्ष, राष्ट्रीय संघ की कार्यकारिणी के स्वतः सदस्य होते है। वर्तमान में विधान संशोधन (वर्ष 2019) के पश्चात राष्ट्रीय (विशाल) कार्यकारिणी में लगभग 250 सदस्य होते हैं। संघ की कार्यकारिणी में पूरे भारतवर्ष के व संघ की सभी सहयोगी संस्था व ट्रस्ट के प्रतिनिधियों की उपस्थिति कार्यकारिणी को बहुआयामी बना देती है।

संघ की प्रति वर्ष एक वार्षिक आम सभा का आयोजन होता है। विधान के अनुच्छेद 20 में संविधान संशोधन का प्रावधान रखा गया है। इसके अनुसार कार्यकारणी द्वारा विचार कर दो तिहाई व कम से कम 25 कार्यकारिणी सदस्यों के

समर्थन से पारित प्रस्ताव को आम सभा में पेश किया जा सकता है। आम सभा द्वारा स्वीकार करने पर ही विधान संशोधन स्वीकृत होता है। संघ का विधान सजीव व सतत् प्रगतिशील व समय के अनुसार बदली परिस्थितियों के अनुसार बदला भी जा सकता है। संघ का विधान आम सभा को सर्वोच्च शक्ति प्रदान करता है। यहाँ एक प्रमुख विशेषता का उल्लेख करना आवश्यक है। विधान के अनुच्छेद 2० (पअ) के अनुसार विधान की प्रस्तावना के वाक्यांश 1,3 (1), 4 (1) व 2० में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। अतः संघ विधान में ही संघ के मौलिक रूप में परिवर्तन पर रोक लगाई जा कर संविधान के मौलिक रूप व विशेषताओं को सुरक्षित कर ''संविधान के बेसिक स्ट्रकचर को नहीं बदला जा सकता है।'' के सिद्धांत को मान्यता प्रदान की गई है।

संघ संविधान की विशेषताएँ

1. समर्पण–

संघ विधान के अनुसार परम पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी म.सा. के शिष्य क्रियोद्धारक पूज्य आचार्यप्रवर श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. एवं उनके पट्ट परम्परा के पाटानुपाट आचार्य एवं उनके आज्ञानुवर्ती संत-मुनिराजों व महासतियाँजी के प्रति गुरु बुद्धि से श्रद्धा रखने वाला, इस संघ के उद्देश्यों में विश्वास रखने वाला एवं इस संघ का हितैषी कोई भी निव्यर्सनी वयस्क व्यक्ति संघ का सदस्य हो सकता है। वर्तमान में संघ के अष्टम् पट्टधर परम पूज्य आचार्य श्री हीराचंद्रजी म.सा. है व पूज्या तेजकंवर जी म.सा साध्वी प्रमुखाजी है। अतः संघ विधान के अनुसार एक विशेष विश्वास व समर्पण की भावना से समर्पित व्यक्तियों का यह संघ है। संघ सदस्य किसी जाति व क्षेत्र के हो सकते हैं परन्तु समर्पण, एक धर्म व एक आचार्य के प्रति होना मूल आवश्यकता है। धर्म आधार है। समर्पण भाव है। रत्नसंघ एक परिवार है।

2. संघ उद्देश्य–

संघ के विधान के अनुच्छेद 3 में संघ के 28 उद्देश्यों का उल्लेख किया गया है। संघ विधान में दिये गये उद्देश्यों से ही स्पष्ट है कि संघ की एक स्पष्ट विचारधारा है जो समर्पित श्रावक-श्राविकाओं का धर्म मार्ग है और उस विचारधारा के संत-सतियाँ जी के प्रति श्रद्धा आवश्यक है। उद्देश्यों में धर्म मार्ग पर चलने के सभी विषय सम्मिलित किये गये है व सभी की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई है। संघ का संक्षिप्त इतिहास संघ विधान में वाक्यांश संख्या 1 में अंकित है जिससे संघ गौरवान्वित है।

विधान के अनुच्छेद 3 (1) के अनुसार ''आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. एवं उनकी पट्ट परम्परा के आचार्यो एवं संत-सतियों की स्मृति में संस्थापित संस्थाओं को संचालित करना, संचालन में सहयोग देना एवं आवश्यकता पड़ने पर संचालन अपने अन्तर्गत लेना।'' विधान के अनुच्छेद 4 (1) के अनुसार संघ सदस्य की आवश्यकता का उल्लेख ऊपर किया गया है। संविधान के इन मूल तत्वों में कभी परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। यह संघ की दूरदर्शिता का परिचायक है।

3. मनोनयन–

संघ मे किसी पद पर चुनाव नहीं होता है। संघ अध्यक्ष व सभी पदाधिकारियों की नियुक्ति मनोनयन से होती है। संघ में ''इलेक्शन'' (चुनाव) को नकार कर ''सलेक्शन'' (चयन) को स्वीकार कर ''रिजेक्शन'' (अस्वीकार) की पद्धति को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया गया है। सार्वजनिक संस्थानों के लिये अपनाई जाने वाली चुनाव पद्धति (वास्तव में एक को चुनो, अनेकों को अस्वीकार करो) को अपनाने से इनकार कर संघ ने एक विचारपूर्ण, गतिशील व लीक से हट कर धार्मिक संघ की प्रकृति के अनुरूप संघ का विधान बना कर आपसी सहमति, सहयोग व विश्वास का मार्ग स्वीकार कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। धार्मिक संघ के उद्देश्य अन्य सभी संस्थानों, संगठनों, या किसी निर्वाचित संस्थानों से पूरी तरह भिन्न होते हैं। अन्य सभी संस्थानों, संगठनों या किसी निर्वाचित संस्थान में किसी एक धर्म या एक स्थाई प्रेरणा का स्रोत (आचार्य श्री, संत-सतियाँ जी) के प्रति समर्पण नहीं होता है। इसके विपरीत धार्मिक संघ में एक धर्म व संघ प्रमुख के प्रति पूर्ण समर्पण अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। चुनाव अन्य सभी संस्थानों, संगठनों, या किसी निर्वाचित संस्थानों में सदस्यों कि भिन्नता व अन्य मापदंड को देखते हुए उपयुक्त (अन्य विकल्प नहीं ढूँढने तक) हो सकता है, परन्तु किसी धार्मिक संघ के लिये यह उपयुक्त नहीं है। अतः धर्म संघ संचालन की सर्वश्रेष्ठ पद्धति, हमारे विधान की विशेषता है। यहाँ मनोनयन में हारा हुआ कोई नहीं है, कोई चुने हुए का समर्थक नहीं है, कोई चुने हुए का विरोधी नहीं है। आमसभा में ना तो कोई कम है ना कोई अधिक, एक भी हारा और एक भी जीता हुआ नहीं है।

4. संघ पदाधिकारियों के कार्यकाल पर सीमा–

संघ के विधान में आम सभा की स्वीकृति से संघ पदाधिकारियों के कार्यकाल पर दो कार्यकाल की अधिकतम समय सीमा तय की गई ताकि नेतृत्व में हमेशा नयापन बना रह सके व सभी को संघ में सेवा व सहयोग करने के अवसर प्राप्त हो सके। संघ एकाधिकार में विश्वास नहीं रखता है।

5. संघ की विशाल कार्यकारिणी –

संघ की कार्यकारिणी में संघ अध्यक्ष, संघ के सभी पदाधिकारी, श्राविका मण्डल, युवक परिषद, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, स्वाध्याय संघ, आध्यात्मिक संस्कार केंद्र आदि के प्रमुख पदाधिकारीगण, संघ की विभिन्न समितियों, ट्रस्टों के प्रतिनिधिगण, सभी स्थानीय संघ अध्यक्ष इत्यादि मिलाकर लगभग 250 सदस्यों की विशाल कार्यकारिणी है। इस प्रकार किसी एक व्यक्ति के नियन्त्रण (एकाधिकार) के बजाय सामूहिक हिस्सेदारी व जिम्मेवारी को महत्व दिया गया है।

6. संघ संरक्षक मण्डल–

संघ के गठन के समय संघ संरक्षक मण्डल का गठन किया गया है। इसके वर्तमान में 17 सदस्य हैं। वर्तमान में संघ संरक्षक मण्डल में हमारे संघ के लब्ध प्रतिष्ठित श्रावक-श्राविकाएं हैं। अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री

दलवीर साहब भंडारी, भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्रमल साहब लोढ़ा को सदस्य के रूप में सम्मिलित किया गया हैं।

7. पदाधिकारियों का कार्यकाल में स्थाई रहना–

संघ के अध्यक्ष व पदाधिकारियों का एक कार्यकाल तीन वर्ष मात्र का है व अधिकतम कार्यकाल छः वर्ष मात्र है अतः संघ व स्थानीय संघों में कभी भी किसी अध्यक्ष या पदाधिकारियों के पद से हटने / हटाने का प्रचलन नहीं है।

8. स्थानीय संघ–

स्थानीय संघ के अध्यक्ष व पदाधिकारियों का भी मनोनयन होता है। इस हेतु संघ नियमावली बनाई हुई है। स्थानीय संघ के अध्यक्ष के मनोनयन के पश्चात अध्यक्ष द्वारा पदाधिकारियों की मनोनयन से नियुक्ति की जाती है। स्थानीय संघों द्वारा न सिर्फ स्थानीय धार्मिक कार्यक्रम स्वतंत्र रूप से किये जाते है अपितु लगभग सभी राष्ट्रीय कार्यक्रम अपने-अपने क्षेत्र में पूरे मनोयोग से किये जाते है। स्थानीय संघों का कार्यकारिणी की बैठकों में प्रभावी रूप से सक्रिय सहयोग, संघ के राष्ट्रीय स्वरूप की शोभा बढ़ाता है। स्थानीय संघों के सहयोग व सक्रियता से संघ के बहुआयामी स्वरूप का पता चलता है।

9. सहयोगी संस्थाएं–

संघ के विभिन्न कार्यक्रमों का सुचारू रूप से संचालन करने हेतु व नये कार्यक्रमों के निर्णय में सहयोग के लिए सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, श्राविका मण्डल, युवक परिषद, स्वाध्याय संघ, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र आदि का गठन कर, धर्म के हर क्षेत्र में प्रभावी कार्य करने हेतु कार्य विभाजन कर, कार्य के क्रियान्वयन में अधिक से अधिक स्वतंत्रता देने के उद्देश्य से विभिन्न पदों का सृजन कर, अलग-अलग जिम्मेवारीयां दी गई है। इन सभी सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्ष / मंत्री / संयोजक / सचिव आदि को कार्यकारिणी में सदस्य के रूप में सम्मिलित किया गया है ताकि संघ की सभी सहयोगी संस्थाएँ सभी संस्थाओं के कार्यक्रम से सीधे रूप से न केवल जुड़ सके अपितु एक दूसरे के कार्य में बहुमूल्य सुझाव व सहयोग दे सके। सहयोगी संस्थाओं व स्थानीय संघों के माध्यम से संस्कार, शिक्षा, धर्म प्रचार हेतु युवा शक्ति का पूरा सदुपयोग कर, श्राविकाओं के माध्यम से घर-घर, बच्चों व युवक-युवतियों, बहु-बेटी को धर्म से जोड़ने व धर्म मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित कर संत-सतियाँ जी की सेवा का लाभ प्राप्त कर जीवन को धर्ममय बनाने में प्रेरणा व सहयोग दिया जा रहा है।

यह अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की कुछ विशेषताओं का वर्णन मात्र है। संघ को पूरा पहचानने के लिये संघ से जुड़ना आवश्यक है। संघ को पहचान कर स्वयं को पहचान सकते है। अपने नश्वर परिचय से ऊपर उठ कर, अपने आचरण से जैन बन कर, अपने चरित्र का परिचय बनाकर, बिना कर्म बंध के, पूर्व कर्म बंधन की निर्जरा करने का अवसर प्राप्त करने के लिये संघ समर्पण के संकल्प का यह आह्वान है। पूज्य आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष के इस पावन पर्व पर संघ समर्पण का संकल्प ले कर जीवन सार्थक करे, ऐसा विनम्र आह्वान है।

संघ समर्पण संकल्प

मैं जैन हूँ।
मुझे जैन होने पर गर्व है।
देवाधिदेव अरिहन्त भगवान मेरे देव है।
सुसाधु मेरे गुरु हैं।
जहाँ दया है वहाँ धर्म है।
मैं अपने आपको देव-गुरु-धर्म एवं संघ के प्रति समर्पित करता हूँ।

-प्रकाश टाटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

विचरण विहार

(दिनांक 14.12.2020 की स्थिति)

☆ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7 श्रीमती शरद् चन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन, पीपाड़ में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 जैन स्थानक, हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं।

☆ सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 धनलक्ष्मी अपार्टमेन्ट, जी-2, अमृतनगर, गोविन्द नगर के सामने, कीम शहर, ता. सूरत में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं।

☆ तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 श्री गौतमजी जैन (डी. एस.ओ.) का मकान, प्लॉट नं. 2, विश्वकर्मा नगर, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं।

☆ श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 चंपक गुरु आराधना भवन, सुभानपुरा स्थानकवासी संघ, अर्बुधा नगर, एलोरा पार्क, बड़ोदरा (गुजरात) में सुखशान्ति-पूर्वक विराजमान है।

☆ श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 प्लॉट नं. 5, डॉ. राम गोयल के बंगले के पास, कमला नगर अस्पताल के पास, पाल लिंक रोड़ देवनगर, जोधपुर में सुखशान्ति-पूर्वक विराजमान है।

☆ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 13 श्री उत्तम स्वाध्याय भवन, 250-बी, गायत्री नगर, महारानी फार्म, सीडलिंग स्कूल के पीछे, जयपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 जैन स्थानक, महावीर भवन, किशनगढ़ शहर (जिला-अजमेर) में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 जैन स्थानक, नांदगांव, जिला-नाशिक में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.आदि ठाणा 3 जैन स्थानक, खेजड़ी

गांव, जिला-अजमेर में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं। अग्र विहार अंटाली की ओर संभावित है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 जैन स्थानक, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी के पास, अरिहन्त कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा 7 श्री सुरेशजी सालेचा का मकान, नं. 110, गुलाब नगर, खेमे का कुंआ रोड़, जोधपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 5 श्री गौतमजी सुराणा का मकान, एस.यू.एस. भवन, नं.-2, विमला स्ट्रीट, अयावू कॉलोनी, एम.आर. हॉस्पिटल के पीछे, अमीनीजीकराई, चेन्नई में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 श्रीमती राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 श्री बंशीलालजी रूणवाल का मकान, सूरजनगर, घाटपुरी नाका, खामगांव, जिला-बुलढ़ाणा में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार मलकापुर की ओर संभावित है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 जैन मंदिर, त्यागराज नगर, बैंगलुरु (कर्नाटक) में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 ए-51, गली नं. 6, होटल सरोवर पोट्रीको के सामने, नित्यानन्द नगर, विद्युत नगर, अजमेर रोड़, मोती नगर, में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 श्री दिनेशजी सुराणा का मकान, 23- राज रत्नम् स्ट्रीट, किलपॉक-चेन्नई (तमिलनाडु) में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4, 'तुलसी वाटिका' श्री भट्टूलालजी मिश्रीलालजी ओस्तवाल का मकान, मोती बाग, सेन्धवा, जिला-बड़वानी में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6, श्री नरेन्द्रजी भण्डारी का मकान,अमरज्योति लेआउट,डोमलर, बैंगलुरु में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4, श्री रमेशजी हीरावत का मकान, 146, भण्डारी अस्पताल के पास, गोपालपुरा बाईपास, वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री पदम्प्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4, श्री सुभाषचंदजी रांका

का मकान, किसान कॉलोनी, भड़गांव, जिला-जलगांव में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3, श्री प्रदीपकुमारजी जैन का मकान, बौंल गांव, तह.-टोडाभीम, जिला-करौली में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5, जैन स्थानक, बोदवड़ गांव, जिला-जलगांव में सुख शांतिपूर्वक विराजमान है।

सभी संत-सती मण्डल के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि है तथा विचरण विहार सुख-शांति पूर्वक चल रहा है।

पूज्य आचार्यप्रवर के पावन अतिशय से अहिंसा नगरी कोसाणा में स्वर्णमयी चातुर्मास

अहिंसा नगरी कोसाणा में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत, रात्रिभोजन त्याग, व्यसनमुक्ति एवं धर्मस्थान में सामायिक-स्वाध्याय, धर्म ध्यान के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.आदि ठाणा का चातुर्मास अहिंसा नगरी कोसाणा में सानन्द सम्पन्न हुआ।

वैश्विक महामारी कोरोना से अहिंसा नगरी कोसाणा पूज्य आचार्य भगवंत के पावन पर्दापण से अब तक कोरोना मुक्त है। अहिंसा नगरी कोसाणा में भले जैन सभी प्रवासी है, लेकिन जैनेत्तर श्रद्धालुओं की श्रद्धा भक्ति, भावना, तपाराधना एवं धर्म रुचि, सत्संग श्रवण की धर्म पिपासा अक्षुण्ण है।

सम्पूर्ण चातुर्मास काल में कोसाणा के जैन प्रवासी परिवारों सहित अन्य ग्राम के रत्नसंघीय परिवारों की सर्वप्रकारेण सेवा-भक्ति, भावना तथा तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यानों में अगाध श्रद्धा, समर्पण, पुरुषार्थ रहा।

वैश्विक महामारी कोरोना के कारण संख्या भले ही कम रही हो, लेकिन विषम परिस्थितियों में जब भी जिसको अवसर की अनुकूलता मिली, गुरुचरणों में आया एवं अपने श्रद्धा, भक्ति, भाव, तप-त्याग के श्रद्धा-सुमन अश्रुपूरित मोती अर्थात् हृदयस्थ भक्ति मणि अर्पित किये। सभी के हृदय में हर्ष था कि पूज्य आचार्य भगवन्त ने चिकित्सा सुविधा सम्पन्न पीपाड़ जैसे नगर को छोड़कर एवं कोरोना के खतरों की स्थिति में अहिंसानगरी कोसाणा को चातुर्मास के लिये स्वीकृत किया। कोरोना के कारण राजकीय बंदिशे लॉकडाउन आदि के भंवर में फंसे सभी प्रवासी रत्नसंघीय गुरुभक्तों ने समक्ष बाधाओं के विरह को सहा और जब अनुकूल अवसर मिला गुरुचरणों में आये। बाधाजनित विरह बेला अश्रुओं में रूपान्तरित होकर भक्तिमय मोतीयों के रूप में छलक उठी। भक्ति में शक्ति होती है एवं भक्त तो भगवान को याद करता है। भगवान भी भक्त को ध्यान में रखते हैं। इस भक्ति की शक्ति से ही राजकीय बाधाओं एवं भयावह कोरोना काल में लगभग 2500 किमी. की यात्रा कर

आये भक्तों की भक्ति की शक्ति से भावना संभावना में एवं बाधाओं के झंझावत में संभावना, साकार में रूपान्तरित हुई। जो गागर में सागर समाने के समान है।

तपस्या के क्षेत्र में:- 12 बेले, 67 तेले, 5 चोले, 9 पचौले, 3 छह की तपस्या, 12 अठाई, 10 नौ की तपस्या, 3 ग्यारह की तपस्या, 2 मासक्षपण, 1 मासक्षपणोपरांत 36 की तपस्या, 1 उपवास की तपस्या लड़ी, एकाशन सिद्धितप 09-10-20 से 20-11-20 तक पूज्य आचार्य भगवंत गुरु हीरा दिवस (58 वां) के उपलक्ष्य में 11+1 उपवास से सिद्धितप के अर्घ्य अर्पित किये। सुश्राविका श्रीमती बिन्दु जी मेहता (सुपुत्री श्री भागचन्दजी एवं श्रीमती बीनाजी मेहता-कार्याध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल) के 78 उपवास की तपस्या चल रही है। 36 उपवास की तपस्या सुश्रावक श्री मोहनजी पोरवाल एवं मासक्षपण की तपस्या के अर्घ्य सुश्राविका श्रीमती मंजुदेवीजी बाघमार धर्मसहायिका श्री अनोपचंदजी बाघमार (मंत्री-कोसाणा श्रीसंघ) एवं युवारत्न श्री हर्षितजी कोठारी (वीर भतीजा) ने 16 वर्ष की वय में अर्पित किए। इस मासक्षपण से पूर्व इसी चातुर्मास में उन्होंने 9 की तपस्या भी की।

पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 58 वे दीक्षा दिवस पर उपवास से सिद्धितप युवारत्न श्री धीरजजी कोठारी (वीरभ्राता-निमाजवाले) एवं एकासन से सिद्धितप 1. श्री एम. अनोपचंदजी बाघमार, 2. श्री डी. पवनकुमारजी बोरा (वीरपुत्र), 3. श्रीमती एम. चन्द्रकलाजी बाघमार, 4. श्रीमती जी. शोभादेवीजी बाघमार, 5. श्री महावीर जी पीतलिया, 6. श्रीमती एस. आशादेवीजी बाघमार एवं जैनेतर तपस्वियों में 7. श्री पवनजी टेलर, 8. श्रीमती सविताजी सैन, 9. सुश्री रेणुजी सैन, 10. श्रीमती पुष्पाबाईजी प्रजापत, 11. सुश्री कोमलजी प्रजापत तथा पीपाड़ श्रीसंघ एवं अनन्य जैन-जैनेतर श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से तपाराधना के अर्घ्य अर्पित किये। इस अवसर पर मारवाड़ अंचल के अनेकों श्री संघों की गुरु चरणों में आकर भक्ति भावना पूर्वक धर्म साधना व तपाराधना करने के भाव थे, लेकिन राजाज्ञा की पालना भी हो एवं सभी श्री संघों एवं श्रद्धालुओं की भावनाओं का सिञ्चन भी, एतदर्थ संघ द्वारा निर्देशित व्यवस्था अनुसार यथास्थान धर्माराधना तपाराधना करके प्रतिदिन निर्धारित संख्या के अनुरूप आगत श्री संघों एवं श्रद्धालुओं को गुरु चरण सन्निधि में धर्मलाभ एवं मांगलिक श्रवण की व्यवस्था का अवसर प्राप्त हुआ।

नवपद आयम्बिल ओली तपाराधना के पावन प्रसंग पर निरन्तर आयम्बिल तपाराधना होती रही। सम्पूर्ण चातुर्मास काल में निरन्तर संवर साधना करने वाले श्री आर. मदनलालजी बाघमार, श्री एम. अनोपचंदजी बाघमार, श्री भागचंदजी मेहता, श्री महावीरजी पीतलिया तथा यथाशक्य संवर साधना करने वाले श्रावकगण में श्री आर. पदमचन्दजी बाघमार (संयोजक), श्री जी. गणपतराजजी बाघमार (अध्यक्ष), श्री डी. विमलचन्दजी बोहरा (वीर पुत्र), श्री डी. पवनकुमारजी बोहरा (वीर पुत्र), श्री पी. धीरज जी कोठारी-निमाज (वीर भतीजा), श्री बी. बुधमलजी बोहरा (वीर भ्राता एवं राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष), श्री डी. गजेन्द्रजी बाघमार, श्री राजेशजी बोहरा (वीर पुत्र), श्री के. प्रकाशचंदजी ओस्तवाल (भोपालगढ़-चेन्नई), श्री सुभाषचंदजी धोका (निमाज-मैसूर), श्री सुनीलजी नाहटा (बंगारपेट) थे।

भिक्षुदया मय ग्यारह सामायिक एवं रात्रि संवर साधना 24 श्रावकों एवं बालकों ने तथा 6 श्राविकाओं एवं बालिकाओं ने की। पूरे चातुर्मास में दो बार धार्मिक संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें पहली बार 12 युवकों ने एवं दूसरी बार में 18 नवयुवकों ने 7 सामायिक करते हुए धर्म चर्चा संगोष्ठी की।

इस चातुर्मासकाल में कई श्रावकों ने शीलव्रत अंगीकार किया, जिनमें श्री आर. पदमचन्दजी बाघमार-संयोजक (सदार), श्री आर. शान्तिलालजी बाघमार (सदार), श्री एम. अनोपचंदजी बाघमार (सदार), श्री जी. राजेन्द्रकुमारजी बाघमार (सदार) तथा श्री डी. राजेशकुमारजी बोहरा (सदार) है।

बाहर से आकर तपस्या के प्रत्याख्यान करने वाले श्रावक-श्राविकाओं में 1. 70 की तपस्या के प्रत्याख्यान सुश्राविका श्रीमती संतोषदेवीजी डोसी धर्मसहायिका श्री बहादुरमलजी डोसी-जोधपुर ने पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से ग्रहण किए। 2. श्री अशोकजी कर्णावट-अरटियाकलां ने 25 की तपस्या के, 3. श्रीमती शारदा जी कर्णावट-अरटियाकलां ने 24 की तपस्या के, 4. श्रीमती अंगुरीदेवीजी कर्णावट ने 20 की तपस्या के, 5. श्रीमती पूनमजी चोरडिया ने 11 उपवास की तपस्या के, 6. श्रीमती मीनाक्षीजी धर्मसहायिका श्री राजेशजी कांकरिया-जोधपुर ने 10 उपवास के, 7. श्री सुनीलजी कर्णावट-अरटियाकलाँ ने 9 की तपस्या के, 8. श्री निखिलजी बालड़-जोधपुर, श्रीमती चिंकीजी बालड़-जोधपुर, श्री अभयकुमारजी लोढ़ा-गोटन, श्रीमती लीलादेवीजी कटारिया-पीपाड़, श्री लूणकरणजी कर्नावट-अरटियाकला ने अठाई तप के, 9. श्री गौरूजी कर्णावट-अरटियाकलां ने तथा श्रीमती सुशीलादेवीजी सिंघवी-बारणीखुर्द ने 7 उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से ग्रहण किये।

गुरु हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ व सविधि करने वाले 1. श्री पी. गजेन्द्रजी बाघमार, 2. श्री पी. हर्षितजी कोठारी-निमाज, 3. श्री संदीपजी बाघमार, 4. श्री डी. विमलजी बोरा, 5. श्री डी. पवन जी बोरा तथा बालवर्ग में प्रतिक्रमण सीखने वालों में 1. श्री एल. सम्राट् बाघमार (11 वर्ष) ने प्रतिक्रमण, 25 बोल, वीर स्तुति, दशवैकालिक के 4 अध्ययन कण्ठस्थ एवं सविधि प्रतिक्रमण करना। 2. श्री एच. विनीत बाघमार (13 वर्ष) ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ व सविधि करना। 3. श्री पी. हितांश बोरा 'वीरपौत्र' (10 वर्ष) प्रतिक्रमण कण्ठस्थ व सविधि करना। 4. श्री एस. लक्ष्य पोकरणा (10 वर्ष) ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ एवं सविधि करना।5. सुश्री जी. कल्पना बाघमार (10 वर्ष) ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ एवं सविधि करना। 6. श्री पी. यशवीर बाघमार (7 वर्ष) ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ एवं सविधि करना। अन्य कई जनों के द्वारा सीखना निरन्तर चल रहा है एवं शीघ्र सम्पूर्ण कण्ठस्थ होना संभावित है एवं चातुर्मास संयोजक श्री आर. पदमचन्दजी बाघमार का प्रतिक्रमण भी कण्ठस्थ होना लगभग पूर्णता की ओर है।

चातुर्मासकाल में चातुर्मासिक सेवा का लाभ लेने वाले श्रद्धालु श्रावक-परिवार एवं स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं में 1. श्री भागचन्दजी मेहता-श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर (5 माह), 2. श्री के. पदमचन्दजी महावीरचन्दजी कोठारी निमाज (5

माह), 3. श्री प्रकाशचन्दजी ओस्तवाल, भोपालगढ़ / चैन्नई, 4. श्री सुभाषचन्दजी धोका, निमाज / मैसूर, 5. श्री सुनीलकुमारजी अनिलकुमारजी नाहटा-बंगारपेट, 6. श्री आर. मदनलालजी सुनीलकुमारजी बाघमार, 7. श्री आर. पदमचन्दजी ललीतकुमारजी बाघमार, 8. श्री आर. शान्तीलालजी प्रशान्तकुमारजी बाघमार, 9. श्री एम. धर्मचन्दजी हंसराजजी, अशोकजी बाघमार, 10. श्री एम. अनोपचन्दजी, पंकजकुमारजी, संदीपजी बाघमार, 11. श्री जी. गणपतराजजी, उपेन्द्रजी बाघमार, 12. श्री दुलीचन्दजी ललितकुमारजी, अरुणजी, सुनीलजी बाघमार, 13. श्री जी. राजेन्द्रकुमारजी बाघमार, 14. श्री प्रेमचन्दजी बाघमार, 15. श्री जी. दिनेशकुमारजी बाघमार, 16. श्री आर. उत्तम चन्दजी, ज्ञानेन्द्रजी, जितेन्द्रजी बाघमार, 17. श्री पी. रमेशचन्दजी, विमलचन्दजी बाघमार, 18. श्री सी. सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतजी बाघमार, 19. श्री ए. नवरतन जी बाघमार, 20. श्री ए. गौतमचन्दजी, राकेशजी बाघमार, 21. श्री नथमलजी बाघमार, 22. श्री जे. राजेशकुमारजी बाघमार, 23. श्री एस. गणपतराजजी बाघमार, 24. श्री पी. राजेशकुमारजी सम्पतराजजी बाघमार, 25. श्री बी. बुधमलजी बोरा, 26. श्री डी. राजेश जी. विमलजी, पवनजी बोरा, 27. श्री पन्नालालजी, माणिकचन्दजी ओस्तवाल, 28. श्री आर. महावीरचन्दजी बाघमार आदि ने अपनी महती सेवाएँ देकर सेवा लाभ लिया।

सर्वतोभावेन की भावना के तहत सक्रिय सेवा युवारत्न 1. श्री एम. सुनील कुमारजी हंसराजजी बाघमार, 2. श्री पी. ललितकुमारजी गजेन्द्रजी बाघमार, 3. श्री ए. पंकजजी संदीपजी बाघमार, 5. श्री जी. उपेन्द्रकुमारजी बाघमार, 6. श्री एस. प्रशान्तकुमारजी बाघमार, 7. श्री यू. ज्ञानेन्द्रजी, जितेन्द्रजी बाघमार, 8. श्री डी. हंसराजजी अशोककुमारजी बाघमार, 9. श्री ए. निखिलजी बाघमार, 10. श्री एल. समकितजी बाघमार, 11. श्री एस. आशीषजी बाघमार, 12. श्री एच. अंकितजी बाघमार, 13. वी. अंकितजी बोहरा, 14. श्री चेतनजी नटवरजी सारस्वत की रही।

गुरु हस्ती के जैनेतर भक्तों में 1. श्री भंवरलालजी सारस्वत (भूतपूर्व सरपंच), 2. श्री बाबूलालजी प्रजापत, 3. श्री सूखारामजी मेघवाल ने चातुर्मासकाल के पूरे पाँच माह प्रवचन, वाचनी का श्रवण कर धर्म लाभ लिया।

कोसाणा श्रीसंघ, श्राविका मण्डल, युवावर्ग एवं श्रावक-श्राविकाओं ने पूज्य गुरुदेव के पावन श्री चरणों में कोरोना के चलते विहार नहीं करने एवं कोसाणा में ही शेषकाल विराजने की विनती बारम्बार की।

विगत कई दिनों से जैनेतर भाई / बहिनों ने भी प्रवचन सभा, दर्शन-वन्दन के समय बारम्बार कोसाणा में ही विराजने की विनती की कि-''बाबजी कोरोणो घणौ फैल गयो है, थै कठै ही मत जाओ, म्हारै गाँव री धरती धन्य हो गई आपरे पधारणे सूं, म्हारा तो भगवान आप ही हो, थै कठे ही मत जावो।''-गिर्राज जैन

चातुर्मास समाचार

सवाईमाधोपुर– मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सवाईमाधोपुर चातुर्मास होने से श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों में अपूर्व धर्माराधना हुई। प्रातः 9.00 बजे से 10.00 बजे तक होने वाले आगम विवेचन में अच्छी उपस्थिति

रही। प्रत्येक रविवार को युवक-युवतियों के लिए प्रातःकाल आओं चले जिनशासन की ओर कक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें विविध विषयों पर महापुरुषों का उद्‌बोधन हुआ। 04 अक्टूबर से 08 अक्टूबर तक पंचदिवसीय शिविर का आयोजन बहुओं के लिए किया गया, जिसमें लगभग 150 बहुओं (श्राविकाओं) ने सात्विक जानकारी प्राप्त की। 06 अक्टूबर 2020 को युवाओं के लिए धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें नवतत्त्वों का अध्ययन कराया गया। इस शिविर में 150 युवाओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। आठवीं कक्षा के ऊपर की बालिकाओं के लिए 31 अक्टूबर से 05 नवम्बर तक षष्ठदिवसीय धार्मिक शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर ज्ञान संवर्द्धन के रूप में याद किया जायेगा। भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक के अवसर पर उत्तराध्ययन वाचन के साथ तेले, बेले, उपवास, एकाशन की आराधना के साथ दो अठाई की तपस्या हुई। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दीक्षा दिवस के प्रसंग पर महापुरुषों द्वारा आचार्यप्रवर के जीवन की अनेक विशेषताओं को बताते हुए गुरु गुणगान किए गए। इस पुनीत अवसर पर सम्पूर्ण पोरवाल क्षेत्र एवं समस्त नगर परिषद् क्षेत्र में अनगिनत एवं पांच-पांच सामायिक के साथ दीक्षा दिवस को मनाया गया। धर्माराधना में सोशल डिस्टेंसिंग का पूरा ध्यान रखा गया।-धनसुरेश जैन

सूरत– सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मासार्थ सूरत विराजने से अपूर्व धर्माराधना हुई। चातुर्मास के प्रारम्भ के साथ ही सरकारी गाइड लाइन का ध्यान रखते हुए प्रातः 09 बजे से 09.30 बजे तक श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण और 25 बोल का अध्ययन करवाया गया तथा 09.30 से 10.15 बजे तक सभी श्रावक-श्राविकाओं की जिज्ञासाओं का समाधान आगमानुसार किया गया। प्रातः 10.15 बजे श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. श्रावक-श्राविकाओं को मंगल पाठ के साथ मंगल आशीर्वाद प्रदान करते। पर्युषण में 8.30 से 9.15 बजे तक अंतगड सूत्र का वाचन किया गया। पर्युषण काल में ही दोपहर 03 से 04 तक ज्ञानचर्चा एवं रात्रि को 08 से 09 बजे आगमानुसार जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। तपस्या के क्षेत्र में 02 मासक्षपण, 9 की एक, 7 अठाई, 1 पचौला तथा अनेक तेले सम्पन्न हुए। पर्युषण पर्व के पश्चात् प्रतिदिन 09 बजे से 9.15 बजे तक पुच्छिसुणं एवं सुखविपाक सूत्र का स्वाध्याय किया गया। उसके उपरान्त 9.15 से 9.30 तक ज्ञान सीखने वालों को समय दिया गया। 9.30 बजे जिज्ञासाओं के समाधान के अन्तर्गत चार माह में लगभग 750 प्रश्नों का आगमानुसार सरल भाषा में समाधान किया गया। समाधान पाकर श्रावक-श्राविकाओं में अच्छा उत्साह था। 06 सितम्बर से रविवारीय पाठशाला 10 वर्ष से बड़े बच्चों के लिए दोपहर में 02 बजे से 03 बजे तक शुरु की गई, जिसमें श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा बच्चों को अध्ययन कराया गया। आचार्य भगवन्त के 58 वें दीक्षा-दिवस पर 75 एकाशन के तेले हुए एवं 20 नवम्बर, 2020 को 30 एकाशन अलग से हुए। इस अवसर पर मुनिमण्डल एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अपने आराध्य के प्रति श्रद्धाभक्ति के भाव प्रस्तुत किए। चातुर्मास समाप्ति के अवसर पर 150 श्रावक-श्राविकाओं की

उपस्थिति रही, जिसमें श्रावक-श्राविकाओं द्वारा संत-मुनिराजों के उपकार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई। उस दिन 15 पौषध-संवर हुए। श्री विपुलजी ढाबरिया, श्री राजीवजी नाहर, श्री निहालचंदजी नाहर, श्री सुरेशजी चौपड़ा, श्री गौरव जी डोसी, श्री शांतिलालजी बाफना, श्री महावीरजी बाफना, श्री राजेशजी तातेड़, श्री सुनीलजी गांधी ने पूरे पांच माह सेवा भक्ति का लाभ लिया। विहार सेवा में भी प्रतिदिन चार से पांच युवकों की टोली बनाकर भेजा गया। स्थानक में धर्मध्यान की व्यवस्था के लिए श्री विमलजी ढाबरिया, श्री शांतिलालजी बाफना, श्री राजीवजी नाहर, श्री कपिलजी जैन, श्री सुशीलजी गोलेच्छा, श्री पदमजी चोरडिया, श्री भागचन्दजी छाजेड़ एवं श्री महावीरजी बाफना ने जिम्मेदारी स्वीकार की। चातुर्मास समापन पर संघमंत्री श्री सुनीलजी नाहर ने पांच माह की रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं सभी सहयोगियों का धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया तथा संघ की ओर से मुनिमण्डल से अविनय अशातना के लिए क्षमायाचना की।-सुनील नाहर, मंत्री

जयपुर– जयपुर संघ की प्रबल पुण्यवानी से आचार्यप्रवर ने पाँच चातुर्मास स्वीकृत किए। महावीर नगर में तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 तथा व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 9 का चातुर्मास, महारानी फार्म में साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 का चातुर्मास, पांच्यावाला एवं नित्यानन्दनगर जयपुर में व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास तथा मालवीय नगर में व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास ज्ञानाराधना, धर्माराधना तथा तपाराधना के साथ सानन्द सम्पन्न हुए। इन चातुर्मासों में 1411 उपवास, 24 बेले, 75 तेले, 20 चौले-पचौले, 40 अठाई, 11 नौ के उपवास, 9 के 11 उपवास, एक 15 उपवास, 2 मासक्षपण तथा एक प्रतर तप के साथ ही सरकारी गाईड लाइन के अनुसार सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अनेकों पौषध तथा संवर भी हुए। कई श्रावक-श्राविकाओं ने सजोड़ें शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। राज्य सरकार व संघ कार्यालय से प्राप्त दिशा निर्देशानुसार सोशल डिस्टेसिंग की पालना करते हुए जयपुर में पाँचों चातुर्मासों स्थलों पर संत-सतीमण्डल के प्रवेश से लेकर पर्युषण तक सेवा लाभ के साथ ही विभिन्न धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बालक-बालिकाओं, श्रावक-श्राविकाओं की सीमित संख्या में कक्षाओं का आयोजन हुआ, जिसमें सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल तथा अन्य थोकड़ें कण्ठस्थ करवाये गये। -सुरेशचन्द कोठारी, मंत्री

जोधपुर– व्याख्यानी श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में आत्म-साधना एवं धर्म-ध्यान की सतत प्रेरणा के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। कोरोना के अधिक फैलाव के कारण जोधपुर के श्रावक-श्राविकाओं को घर पर रहकर धर्म ध्यान करने की निरन्तर प्रेरणा प्राप्त होती रही। चातुर्मास प्रारम्भ होने के साथ ही 24 तीर्थंकर की आराधना का कार्यक्रम रखा गया । जिसमें घर पर रहकर 140 श्रावक-श्राविकाओं ने तीर्थंकर आराधना का लाभ प्राप्त किया। एकदिवसीय आराधना में भी लगभग 300 की संख्या रही। सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल एवं 67 बोल सिखाने के दृष्टिकोण से सीमित संख्या रखते हुए

कक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें समय-समय पर श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। तपस्या के क्षेत्र में श्राविका रत्न श्रीमती संतोषजी डोसी धर्मसहायिका श्री बहादुरमलजी डोसी ने 71की तपस्या की। पर्युषण में 5-6 अठाई हुई तथा कई तेले के प्रत्याख्यान हुए। पर्युषण पर्वाराधना के अवसर पर एक संकल्प पत्र तैयार कर घर पर ही आराधना करने की प्रेरणा की गई। जिसके फलस्वरूप सैकड़ों संकल्प पत्र संघ को प्राप्त हुए। श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी एवं युवक परिषद् अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा द्वारा आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी के उपलक्ष में प्रतिक्रमण सीखने सिखाने तथा आवश्यक सूत्र परीक्षा में भाग लेने की प्रेरणा की जा रही है। अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकायें पुरूषार्थ कर रहे है। ऑनलाईन प्रतिक्रमण सीखने में 125 श्रावक-श्राविकायें भाग ले रही हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा के दिग्विजय नगर बिराजने से सरकार की गाईड लाईन के कारण श्रावक-श्राविका एवं युवा साथियों ने सीमित संख्या में धर्माराधना का लाभ प्राप्त किया। महासती श्री शशिकलाजी म.सा. आदि ठाणा के शक्ति नगर में बिराजने से वहां के श्रावक-श्राविकाओं ने भी धर्माराधना का लाभ लिया। अभी तक 9 की तपस्या- 2, 8 की तपस्या - 5, 25 तेले, 5 एकान्तर, 4 एकासन के मासखमण, सम्पन्न हुए है। श्री महेन्द्रकुमारजी, ऊषाजी सिंघवी ने शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये।-नवरतन गिड़िया, मंत्री

शिवाजीनगर, मदनगंज–किशनगढ़– विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास ज्ञानाराधना एवं तपाराधना में पुरुषार्थ के साथ सम्पन्न हुआ। बालक रौनक कोटेचा ने दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन कण्ठस्थ किए। अनिलजी मुथा ने कर्मग्रंथ, इन्द्रियपद, 24 ठाणा थोकड़ें कण्ठस्थ किए। कई बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण सूत्र कण्ठस्थ किया। पर्युषण पर्व में 25 तेले, एकाशन की अठाईयाँ तथा सैंकड़ों की संख्या में उपवास हुए। आचार्य भगवन्त के दीक्षा दिवस पर एकाशन के तेले, उपवास के तेले तथा सैकड़ों की संख्या में एकाशन तप हुए।

अरटिया कलां, जोधपुर– व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 के अरटिया चातुर्मास में अपूर्व धर्माराधना हुई। सभी श्रावक-श्राविकाओं, जैन और जैनेतर समाज में धर्माराधना, तप-त्याग का ठाट रहा। चातुर्मासकाल में 1. श्रीमती शारदाजी धर्मसहायिका श्री बादलचन्दजी कर्णावट, 2. श्रीमती अंजूजी धर्मसहायिका श्री दिलीपजी कर्णावट, 3. श्री अशोकजी सुपुत्र श्री उगमचन्दजी कर्णावट ने मासक्षपण की तपस्या की। श्रीमती शारदाजी कर्णावट ने आयंबिल का मासक्षपण भी किया। सुश्री खुशबुजी जैन सुपुत्री श्री बादलचन्दजी कर्णावट, श्रीमती खम्माबाईजी धर्मसहायिका श्री रतनलालजी कर्णावट, श्रीमती ललिताजी धर्मसहायिका श्री अशोकजी कर्णावट, श्रीमती लक्ष्मीजी धर्मसहायिका श्री लूणकरणजी कर्णावट ने सिद्धितप (एकाशन के साथ) की आराधना की। अन्य तपस्या के क्रम में 15 की एक, 11 की तीन, 9 की तीन, 6 अठाई, चार पचौले, 33 तेले, 34 बेले, 207 उपवास, 700 एकाशन व्रत की आराधना हुई। दो बार भिक्षु दया का आयोजन किया गया, जिसमें

50-50 लोगों ने भाग लिया। नवकार महामंत्र का जाप लगभग पूरे पाँच माह दो घण्टे प्रतिदिन किया गया। चर्चा परिचर्चा का लाभ भी नियमित प्राप्त हुआ। प्रत्येक सप्ताह कुछ न कुछ धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 58वें दीक्षा-दिवस के अवसर पर 87 एकाशनें एवं 16 उपवास हुए। 15 श्रावक-श्राविकाओं ने प्रतिक्रमण सीखा तथा 9 श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक कण्ठस्थ की। एक जैनेतर बालक श्री रविकुमार सैन सुपुत्र श्री रतनजी सैन पूरे पांच माह तक प्रार्थना में उपस्थित रहा। इस बालक का ज्ञानार्जन भी सराहनीय रहा। चातुर्मास में सहयोग करने वाले सभी कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। चातुर्मासिक चतुर्दशी पर्व पर 55 एकाशनें एवं 07 उपवास की आराधना हुई। आयंबिल ओली के दौरान 25 आयंबिल हुए तथा 9 दिनों के लिए 12-12 घण्टे नवकार मंत्र का जाप हुआ। पर्युषण पर्व में 24 घण्टें का जाप किया गया। दिपावली पर्व पर 7 तेले हुए तथा तीन दिनों तक 12-12 घण्टों का जाप किया गया। इस चातुर्मास में श्रावकरत्न श्री उगमचन्दजी कर्णावट एवं श्रावकरत्न श्री अम्बालालजी कर्णावट की अगुवाई में पूरे संघ एवं सभी परिवारों का सौहार्द, सामजस्य पूर्ण प्रेम उल्लेखनीय रहा। कोरोनाकाल रहते हुए भी अरटिया संघ ने धर्माराधना तथा अतिथि सेवा का लाभ प्राप्त किया। चातुर्मासकाल में बारणी, भोपालगढ़, गोटन, नाडसर आदि संघों का सहयोग प्राप्त हुआ। चातुर्मासकाल में लगभग सभी कार्यक्रमों का संचालन श्री नेमीचन्दजी जैन-कर्णावट ने किया। जैनेतर भाई श्री घमण्डारामजी ने पूरे पांच माह तक प्रार्थना एवं ज्ञानचर्चा का लाभ लिया।-इन्दरचन्द कर्णावट

अयनावरम्– व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास में स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं को अपूर्व धर्माराधना का अवसर प्राप्त हुआ। चातुर्मास प्रवेश के साथ ही चौमासी पर्व के दिन लगभग 1100 सामायिक हुई। 18 से 20 जुलाई को एकाशन के तेले का आयोजन किया गया, जिसमें 80 तेले हुए। आयम्बिल की लड़ी निरन्तर चली। एकान्तर, एकाशन और चन्द्रकला तप भी हुए। बालक एवं बालिकाओं के लिए पृथक्-पृथक् शिविर का आयोजन किया गया। पर्युषण पर्व के दौरान अन्तगड़ सूत्र का वाचन एवं प्रातः 06 से सायं 06 बजे तक नवकारमंत्र का जाप रखा गया। संवत्सरी के दिन 40 तथा कार्तिक चौमासी के दिन भी करीब 35 से 40 पौषध हुए। तपस्या के क्षेत्र में 15 उपवास की तपस्या वीरपिता श्री रिखबचन्दजी बाघमार एवं श्रीमती गंगाबाई जी कर्णावट ने की। 12 की एक, 9 की दो, 12 अठाई, 1 चौला, 22 तेले तथा अनेक बेले, उपवास, एकाशन आदि की तपस्याएँ हुई। दैनिक कार्यक्रम में प्रतिदिन 06.30 बजे से 7.30 बजे तक तथा थोड़े काल के लिए 7.15 से 8.15 बजे तक धार्मिक कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिसमें महासती मण्डल द्वारा विभिन्न विषयों पर उद्बोधन दिया जाता था, जिसमें करीब 30 से 40 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती थी। दोपहर 02 बजे से 3.30 बजे तक धर्मचर्चा में 12 व्रतों का स्वरूप समझाया गया। प्रतिदिन रात्रि को श्राविकाओं द्वारा संवर की आराधना की गई। कार्तिक पूर्णिमा के दिन 40 संवर हुए। थोकड़ों की कक्षा में लघुदण्डक, कर्मप्रकृति, पांच समिति-तीन गुप्ति, रुपी-अरुपि, उपयोग-संज्ञा आदि का अध्ययन

कराया गया। सम्यक् दर्शन का स्वरूप विषय पर शिविर आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 30 श्राविकाओं ने भाग लिया। आवश्यक सूत्र की परीक्षा में 20 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। प्रत्येक रविवार को युवक-युवतियों के लिए विशेष धार्मिक उद्बोधन की कक्षा रखी गई। श्राविकरत्न श्रीमती संतोषबाईजी गादिया, श्रीमती प्रियाजी दुग्गड़, श्रीमती हेमाजी बाबेल ने कर्मग्रंथ का तथा श्रीमती संगीताजी एवं श्रीमती आरतीजी बोहरा ने पंचसंग्रह का अध्ययन किया। 9 श्रावक-श्राविकाओं ने उत्तराध्ययन का अध्ययन किया। 4 श्राविकाओं ने दशवैकालिक सूत्र का अध्ययन किया। 3 श्राविकाओं ने सुखविपाक सूत्र का अध्ययन किया। 25 बोल, कर्मप्रकृति का अध्ययन भी करवाया गया। 8 श्रावक-श्राविकाओं ने पुच्छिसुणं का अध्ययन किया। लगभग 20 युवक-युवतियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया। श्री प्रफुल्लजी तातेड़ ने भक्तामर कण्ठस्थ किया। विशेष ज्ञानाराधना में रुबिजी तलेसरा ने मात्र पांच वर्ष की आयु में सामायिक सूत्र कण्ठस्थ किया, लीसा रांका ने मात्र 13 वर्ष की उम्र में सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, पुच्छिसुणं, दशवैकालिक 1 से 4 अध्ययन एवं 15 थोकड़े कण्ठस्थ किए। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.के 58 वें दीक्षा दिवस पर 240 एकाशन तप की आराधना हुई। 22 नवम्बर, 2020 को 40 वर्ष के ऊपर श्रावक-श्राविकाओं को ओल्ड इज गोल्ड विषय पर शिविर रखा गया, जिसमें 50 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। 25 नवम्बर को गोशालक चरित्र का वाचन किया गया, जिसको निराहार रहकर तपस्या के साथ श्रवण किया। इस चातुर्मास में नवयुवक मण्डल की सेवाएँ सराहनीय रही, जिसमें श्री ज्ञानचंदजी रांका, श्री महावीरचन्दजी बांठिया एवं श्री सम्पतराजजी दुग्गड़ का सराहनीय सहयोग रहा। चातुर्मासकाल में तीन ठाणा से करीब चार माह तक चिंतादरी पेठ क्षेत्र को भी लाभ मिला। 29 नवम्बर, 2020 को कृतज्ञता समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर चातुर्मास देने के लिए गुरु भगवन्त का तथा आराधना के लिए महासतीवृन्द का आभार व्यक्त करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की।-सुभाषचंद छाजेड़, मंत्री

बैंगलुरु– व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास चामराजपेठ में साधना-आराधना के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। यहाँ उपवास, एकाशन, आयंबिल की लड़ी निरन्तर चली। साथ ही एकाशन, आयंबिल, उपवास के आदि के एकान्तर तप भी सम्पन्न हुए। रात्रिभोजन त्याग, ब्रह्मचर्य व्रत पालन एवं चार खंध के प्रत्याख्यान भी कई श्रावक-श्राविकाओं ने पाँच माह के ग्रहण किए।

व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 का चातुर्मास राजाजीनगर, बैंगलुरु में आत्मसाधना-आराधनापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस चातुर्मास में 300 एकाशन, लगभग 500 आयंबिल, 15 तेले, 2 अठाई तप, नौ की तपस्या, 5 वर्षीतप, 15 एकाशन मासक्षपण, 5 आयंबिल मासक्षपण के साथ ही सैंकड़ों उपवास की तपस्याएँ हुई। दीपावली पर 15 तेले हुए। 11 भाई-बहिनों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया। श्रीमान् जगदीशमलजी गुन्देचा-श्रीरामपुर ने शीलव्रत के साथ संथारा प्रत्याख्यान ग्रहण किया। एक गुप्त सज्जन ने सजोड़े शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

वर्द्धमान नगर, हिण्डौनसिटी– व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि

ठाणा 3 के सान्निध्य में यह चातुर्मास ज्ञानाराधना, तपाराधना के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। चातुर्मास में चार आजीवन शीलव्रत के खंद हुए। दो बार बालिकाओं तथा श्राविकाओं ने भिक्षु दया की। 20 भाई-बहिनों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया। 37 श्रावक-श्राविकाओं ने लघुसर्वतोभद्र तप पूर्ण किया। 20 नवम्बर को 36 जनों ने गुरु भक्ति दर्शाते हुए तेला व्रत की आराधना की।-श्रेयांश जैन

संघ की संचालन समिति–कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक तथा आमसभा ऑनलाईन सफलतापूर्वक आयोजित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संचालन समिति एवं कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक शनिवार दिनांक 17 अक्टूबर 2020 को ऑनलाईन जूम एप्प के माध्यम से प्रातः 10.30 बजे प्रारम्भ हुई बैठक में 63 कार्यकारिणी सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में सदस्यों से संघहित में कई महत्वूपर्ण सुझाव प्राप्त हुए।

1 नवम्बर 2020 को संघ एवं संघीय संस्थाओं की संयुक्त आमसभा भी ऑनलाइन जूम एप्प के माध्यम से आयोजित हुई। जिसमें लगभग 150 संघ सदस्यों ने सहभागिता प्रदान की।

दोनों ही बैठकों की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने की। संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत, शासन सेवा समिति संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना सहित संघ संरक्षकगणों तथा शासन सेवा समिति सदस्यों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। -धनपत सेठिया, महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का संक्षिप्त प्रतिवेदन

जिनशासन की गौरवशाली रत्नसंघ परम्परा के संघ सदस्य होकर हम गौरवान्वित हैं। एक ओर जहाँ त्यागी-वैरागी महापुरूष संघ की जाहोजलाली कर रहे हैं वही हमारे समर्पित श्रावक-श्राविकाएँ भी अध्यात्म की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर सहित मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल सामायिक- स्वाध्याय की प्रभावी प्रेरणा कर श्रावक-श्राविकाओं को चतुर्विध संघ-सेवा से जोड़ रहे हैं।

संघ व संघीय संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा के पावन प्रसंग पर संघ का वार्षिक प्रतिवेदन आपको वॉट्सअप्, ईमेल के माध्यम से प्रेषित किया जा चुका है। फिर भी संघ सदस्यों की जानकारी के लिये संक्षिप्त प्रतिवेदन रत्नम में प्रकाशित किया जा रहा है।

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ इस वर्ष रत्नसंघ के 23 चातुर्मास स्वीकार किये।
- मार्च 2020 से कोरोना महामारी के कारण हुए लॉकडाउन में संघ द्वारा संत-सतीवृन्द की सेवा में कोरोना से बचाव हेतु गाईडलाईन भेजी गयी। इसी के साथ चातुर्मास करवाने वाले संघों तथा श्रावक-श्राविकाओं को भी समय-समय पर सरकार द्वारा जारी की गई गाईडलाइन के अनुसार संघ द्वारा भी गाईडलाइन बनाकर प्रेषित की गयी। सभी स्थानों पर श्रावक-श्राविकाओं ने विशेष ध्यान

- देकर गाईडलाइन का पूर्णतः पालन किया तथा संत-सतीवृन्द की सार-सम्हाल करते हुए घर पर रहकर ही साधना-आराधना की।
- संघ व संघ की संस्थाओं की वित्तीय व्यवस्था में गजेन्द्र निधि एवं गजेन्द्र फाऊण्डेशन का महत्त्वपूर्ण योगदान है। संघ के उदारमना श्रावकों द्वारा गजेन्द्र निधि एवं गजेन्द्र फाऊण्डेशन के न्यासी बनकर न्यासों को मजबूत बनाया जा रहा है। इस हेतु विशेष प्रयास किये गये। वर्ष 2019 में 133 न्यासी थे, इस हेतु प्रेरणा कर इस वर्ष 7 नये न्यासी बनाये गए ।
- संघ की प्रवृत्तियों गतिविधियों एवं चारित्रात्माओं के विचरण-विहार विषयक जानकारियों से युक्त ''रत्नम्'' अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का समाचार सन्देश पत्र सम्पूर्ण भारतवर्ष में लगभग 6700 संघ सदस्यों को प्रेषित किया जा रहा है।
- चतुर्विध संघ एवं विरक्त भाई-बहिनों के साथ संघ व संघ की संस्थाओं द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाले स्थानीय क्षेत्रीय एवं प्रान्तीय शिविरों के अध्यापन हेतु कुशल विद्वान अध्यापकों का सहयोग लिया जा रहा है। शिक्षा समिति के संयोजक श्री प्रमोद जी महनोत-जयपुर अपनी महनीय सेवाएं संघ को प्रदान कर रहे हैं।
- संघ द्वारा श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत श्री जैन रत्न वात्सल्य निधि की स्थापना की गई थी। वर्तमान में अध्ययन, चिकित्सा एवं पारिवारिक भरण-पोषण हेतु 213 परिवारों को सहयोग दिया जा रहा है। इसके सफल संयोजन हेतु समिति संयोजक श्री सुमतिचन्द जी मेहता-पीपाड़ को हार्दिक धन्यवाद।
- आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के तहत विगत वर्ष में 480 छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई तथा इस वर्ष भी आवेदन पत्र प्राप्त हो रहे हैं। इसके सफल संयोजन का दायित्व श्री हरीश जी कवाड़-चेन्नई संभाल रहे हैं।
- संघ के अन्तर्गत जैन रत्न प्रोफेशनल एसोशिएशन का गठन किया गया। संयोजन का उत्तरदायित्व श्री शेखर जी भंडारी को प्रदान किया गया। इस फॉरम के अन्तर्गत अभी तक विभिन्न विषयों पर 8 वेबीनारों का आयोजन किया जा चुका है।
- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की वेबसाईट एवं बहुपयोगी एप्प ''रत्नसंघ'' में नये-नये फीचर्स जोड़े गये है, जिससे संघ के सदस्य लाभान्वित हो रहे हैं। इस हेतु प्रभारी युवारत्न श्री विकासजी गुन्देचा तथा उनकी टीम ने भरपुर प्रयास किए। एप्प के माध्यम से ही संघ सदस्यों का पूर्ण डाटा एकत्रित करने का प्रयास किया जा रहा है। गत वर्ष जनवरी 2019 में एप्प में 11000 का डाटा था तत्पश्चात् संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् स्थानीय संघ इत्यादि के अथक प्रयास से श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों सहित परिवार के आंकड़े बढ़-चढ़ कर लगभग 22000 हो चुके है।
- चतुर्विध संघ के आधार स्तम्भ पूज्य संत-सतीवृन्द की रत्नत्रय साधना-आराधना में सतत अभिवृद्धि हो रही है। गत जनवरी 2020 में जयपुर एवं जलगांव में मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिका जी मुणोत तथा मुमुक्षु बहिन सुश्री निमीषा जी लुणावत

- की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। दीक्षा पूर्व दोनों ही स्थानों पर दीक्षा संबंधी व्यवस्था हेतु स्थानीय संघ से दीक्षा समिति उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र जी कटारिया एवं उनकी टीम ने समन्वय किया।
- चातुर्मास की घोषणा/स्वीकृति के बाद कोरोना महामारी जनित लॉकडाउन, कर्फ्यु जैसी भीषण परिस्थितियों में राजाज्ञा-अनुज्ञा व्यवस्था के अनुरूप, स्वीकृत क्षेत्रों में संत-सती मण्डल का चातुर्मास हेतु पदार्पण हो एवं सुरक्षित, स्वास्थ्य रक्षण के साथ गंतव्य तक पहुंचे, तदर्थ चातुर्मास समिति, विहार समिति, स्थानीय एवं मध्यवर्ती क्षेत्रों के पदाधिकारियों, सुज्ञ श्रावकों, सेवाभावी युवकों के पारस्परिक संवाद, सहयोग, सक्रियता, सामंजस्य से यथासंभव चातुर्मास स्थलों तक पदार्पण कराया गया। चातुर्मास समिति के संयोजक श्री कुशल जी गोटेवाला ने सभी क्षेत्रों से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखा।
- देश के विभिन्न क्षेत्रों के संघ-सदस्य विहार-सेवा से जुड़े, इस हेतु उपाध्यक्ष श्री पारसमल जी गिड़िया के निर्देशन में विहार समिति द्वारा प्रयास किये गये। भीषण परिस्थितियों में जिन श्रावक-श्राविकाओं, युवाओं ने परिवार सहित जो अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की,उन्हें संघ की ओर से हार्दिक धन्यवाद।
- रत्नसंघ की स्थानीय शाखाओं में स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवनों के मूल दस्तावेज व्यवस्थित करने एवं उनकी समुचित व्यवस्था का प्रयास किया गया। इस हेतु एवं मुमुक्षुओं की सार-सम्हाल में मुमुक्षु समिति में भी उपाध्यक्ष श्री प्रमोदजी लोढ़ा-जयपुर की महनीय सेवाएं प्राप्त हो रही हैं।
- स्वास्थ्य समिति के माध्यम से संत-सतीवृन्द की सेवा में पहुंचकर श्रमणोचित औषधोपचार में सहयोग प्रदान किया गया। उपाध्यक्ष श्री मनमोहन जी कर्णावट एवं उनकी टीम ने संबंधित स्थानीय चिकित्सकों से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखा।
- संघ को आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़, सक्षम एवं स्वावलम्बी बनाने हेतु सभी सदस्यों को पत्र प्रेषित किया गया। संघ एवं संघ की सभी बैठकों में संघ-सेवा सोपान में सहयोग हेतु निरन्तर प्रेरणा की गई। इस हेतु उपाध्यक्ष श्री कैलाशमल जी दुग्गड़ निरन्तर प्रयास कर रहे हैं।
- संघ एवं संघ की सभी शाखाओं में निरन्तर सम्पर्क रखा जा रहा है। उपाध्यक्ष श्री सुरेश जी चोरडिया की सेवाएं प्राप्त हो रही है।
- अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के माध्यम से वात्सल्य निधि, छात्रवृत्ति योजना के लाभार्थियों, शिक्षण संस्थान के छात्रों, संघ सहयोगी एवं संघ सदस्यों को अल्पसंख्यक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रमाण-पत्र बनवाने हेतु फोन द्वारा, पत्र द्वारा तथा जिनवाणी में समाचार प्रकाशित कर निवेदन किया गया। इस हेतु किसी भी प्रकार की समस्या होने पर उपाध्यक्ष श्री नवरतन जी डागा द्वारा उनका निवारण भी किया जा रहा है।
- संघ के सभी स्थायी कार्यक्रमों के कार्य मूल्याकंन करने हेतु भिन्न-भिन्न कमेटी बनाने का सुझाव प्रस्तावित किया गया।
- संघ की वित्त व्यवस्था व व्यय की युक्तिसंगत समीक्षा करने के लिए राष्ट्रीय

कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी कुम्भट के निर्देशन में सभी संस्थाओं को बजट हेतु निवेदन किया गया तथा सभी संस्थाओं से प्राप्त बजट में खर्चों की समीक्षा करते हुए बजट को अन्तिम रूप प्रदान किया गया।

संघ संचालन में परम पूज्य आचार्य भगवन्त, पूज्य गुरु भगवन्तों एवं पूज्या महासतीवृन्दों का पावन आशीर्वाद, सम्माननीय संघ संरक्षक गण, शासन सेवा समिति, राष्ट्रीय संघाध्यक्ष का मार्गदर्शन मुझे प्राप्त हुआ। साथ ही कार्याध्यक्षगण, सभी उपाध्यक्षगण, कोषाध्यक्ष, सह कोषाध्यक्ष, संयुक्त महामंत्रीगण, सभी संस्थाओं के अध्यक्ष, संयोजक एवं संघ के सभी संघ-सेवी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं के साथ ही आप सब संघ बन्धुओं का संरक्षण, स्नेह, सहयोग मेरे लिए प्रमुख संबल रहा है। इसी के साथ ही प्रधान कार्यालय के सभी सहयोगियों का भी बहुत आभार कि उन्होंने कोरोना की विषम परिस्थितियों में भी संघ को सहयोग प्रदान किया।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर के वर्ष 2020 के चातुर्मास को सफल बनाने हेतु कोसाना संघ एवं स्थानीय संघ सदस्यों का हार्दिक आभार। इसी के साथ ही रत्नसंघीय संत-सतीवृन्द के चातुर्मास को सफल बनाने हेतु चातुर्मासिक संघों तथा स्थानीय संघ सदस्यों का भी संघ हार्दिक आभार प्रकट करता है। वर्तमान वैश्विक महामारी कोरोना की कठिन परिस्थितियों में पूरे भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों पर कोरोना महामारी तथा अन्य कारणों से संघ के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं, युवाओं की असमय स्वर्गगमन से संघ में अपूरणीय क्षति हुई है। हम संबंधित परिवारों को संघ की ओर से हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं।

संघ की सहयोगी संस्थाओं के संक्षिप्त प्रतिवेदन भी रत्नम् के आगामी अंक में प्रकाशित किए जायेंगे। -धनपत सेठिया, महामंत्री

विनम्र अनुरोध

इतिहास मार्तण्ड, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा समय-समय पर ''संघ की महिमा'' विषय पर दिये गये प्रवचनों को सुनकर सुज्ञ श्रावकों ने अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की स्थापना की। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. संघ-सेवा को कर्म-निर्जरा का कारण बताते हुए फरमाते है कि साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, ज्ञान, दर्शन, चारित्र इन सात क्षेत्रों में दिया जाने वाला द्रव्य निर्जरा के लिए होता है। संघ में सभी योजनाएं संघनिष्ठ गुरु भक्त श्रावक-श्राविकाओं के सहयोग से ही संचालित हो रही हैं। आप अपने द्रव्य का सदुपयोग कर्म-निर्जरा के लिए करें, अतः संघ ने 'संघ-सेवा-सोपान' के माध्यम से सभी गतिविधियों में आप किस तरह जुड़ सकते हैं, इसकी योजना प्रस्तुत की हुई है। आपसे हमारा विनम्र अनुरोध है कि आप संघ की योजनाओं में मुक्त-हस्त से दान देकर कर्म-निर्जरा के भागी बनें। आप संघ समर्पित सदस्य हैं, अतः अवश्य लाभ लें। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

निवेदक

कैलाशमल दुग्गड़	प्रमोद लोढ़ा	नरेन्द्र हीरावत	अनिल सुराणा
9841008585	9829051083	9821040899	9869541530

—:धन्यवाद आभार:—

1. आवश्यक सूत्र एवं प्रतिक्रमण सूत्र पुस्तक का प्रकाशन:—

आचार्यश्री हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष के अवसर पर संघ द्वारा आवश्यक सूत्र पर प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया, जिसके लिये सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रारम्भ में 3000 पुस्तकें आवश्यक सूत्र की तथा 5000 पुस्तकें प्रतिक्रमण सूत्र की प्रकाशित की गई थी। पुस्तकों की अत्यधिक मांग होने के कारण आवश्यक सूत्र की 2100 प्रतियों का पुनः प्रकाशन किया गया। उपरोक्त वर्णित सभी पुस्तकों के प्रकाशन में उदारमना, अनन्य गुरुभक्त धर्मनिष्ठ श्रेष्ठीवर्य श्रावकरत्न **स्व. श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ एवं स्व. श्रीमती सुन्दरबाईजी कवाड़ की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री दलीचंदजी कवाड़, श्री प्रेमकुमारजी कवाड़ एवं सुपौत्र श्री हरीशकुमारजी कवाड़, पीपाड़ शहर—चेन्नई की ओर से अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ,** जिसके लिये संघ एवं मण्डल की ओर से कवाड़ परिवार को हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

2. उत्तराध्ययन सूत्र पुस्तक का प्रकाशन:—

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा उत्तराध्ययन सूत्र भाग-1 की 1300 प्रतियों का पुनः प्रकाशन किया गया। उत्तराध्ययन सूत्र के इस नवीन संस्करण में अमेरिका से श्रावकरत्न **श्री राजीवजी नीताजी डागा** ने 1100 प्रतियों के लिये तथा अहमदाबाद से श्रावकरत्न **श्री पदमचन्दजी कोठारी** ने 200 प्रतियों के प्रकाशन के लिये अर्थ सहयोग प्रदान किया। एतदर्थ संघ एवं मण्डल परिवार की ओर से डागा एवं कोठारी परिवार को हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

3. सामायिक साधना और स्वाध्याय पुस्तक का प्रकाशन:—

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सामायिक साधना और स्वाध्याय नामक पुस्तक के द्वितीय संस्करण की 1100 प्रतियों का प्रकाशन किया गया। पुस्तक के प्रकाशन में **श्रीमती नीताजी राजीवजी डागा, (यू.एस.ए.)** ने उदारतापूर्वक अर्थ सहयोग प्रदान किया। जिसके लिये डागा परिवार को संघ व मण्डल परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

4. प्रार्थना पुस्तक का प्रकाशन:—

श्रावकरत्न श्री जवाहरलालजी शेषमलजी कोठारी, श्रीमती सायरकंवरजी— श्री प्यारेलालजी कोठारी की पावन स्मृति में श्रीमान बुधमलजी, पदमचन्दजी, चैनराज जी, मृगेशजी, संजीवजी, शीतलजी, सिद्धार्थजी, रजतजी, वंशजी, रेयांशजी कोठारी परिवार (रणसीगांव) अहमदाबाद—कनकम्माछत्रम की ओर गत 9 वर्षों से प्रार्थना पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस वर्ष भी 2100 प्रतिया प्रकाशित करवाकर संघ को भेंट की गई, जिसके लिये कोठारी परिवार को संघ की ओर से हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

5. स्वाध्यायी मंजूषा पुस्तक का प्रकाशन:—

आचार्य श्री हस्ती शताब्दी वर्ष एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ,

जोधपुर के हीरक जयन्ती के अवसर पर स्वाध्याय संघ द्वारा स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी स्वाध्यायी मंजूषा नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोग **श्री पी. शिखरमलजी सुराणा परिवार चैन्नई** द्वारा प्राप्त हुआ है। स्वाध्यायी संघ परिवार की ओर से सुराणा परिवार को हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

6. स्वाध्याय शास्त्र–माला पुस्तक का प्रकाशन:–

जिज्ञासु पाठकों एवं आगम रसीक श्रावकों के लिए उपयोगी पुस्तक स्वाध्याय शास्त्र माला का प्रकाशन सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा किया जा रहा है। जिसका अर्थ सहयोग **श्रीमान् सोहनलालसा बुद्धमलसा बागमार, मैसूर** से प्राप्त हुआ है। संघ की ओर से तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से बागमार परिवार को हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

7. रत्नम पत्रिका का प्रकाशन:–

रत्नम् के नियमित अंकों के प्रकाशन में **श्री कनकराजजी, महेन्द्रजी कुम्भट परिवार, जोधपुर–मुम्बई** का अर्थ सहयोग निरन्तर प्राप्त हो रहा है। अतः कुम्भट परिवार को हार्दिक धन्यवाद। प्रतिवर्ष जुलाई माह में रत्न संघ के संत-सतीवृन्द के चातुर्मास की सूची रत्नम् समाचार-पत्र में रंगीन पृष्ठ के साथ प्रकाशित की जाती है। जिसका सहयोग गत् 7-8 वर्षो से **श्री प्रवीण कुमार जी, मनोज कुमार जी संकलेचा, कुम्भकोणम, चैन्नई** द्वारा प्राप्त हो रहा है। इस वर्ष भी आपका सहयोग प्रकाशन हेतु प्राप्त हुआ है। संघ द्वारा संकलेचा परिवार कुम्भकोणम का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

8. सामायिक–उपकरण हेतु सहयोग:–

गत् तीन वर्षो से अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा लागत मूल्य पर सामायिक के उपकरण श्रावकों हेतु उपलब्ध कराये जा रहे हैं। इसका अर्थ सहयोग **एन.आर. जैन परिवार–शिवाकाशी** से प्राप्त हो रहा है। अब श्राविकाओं के लिए भी लागत मूल्य पर उपकरण उपलब्ध कराने की आपकी स्वीकृति हमें प्राप्त हुई है। संघ की ओर से एन.आर. जैन परिवार-शिवाकाशी को हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

बधाई / मनोनयन

जोधपुर– अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष

माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया को राष्ट्रीय हरित अधिकरण, नई दिल्ली द्वारा जोधपुर, बालोतरा तथा पाली औद्योगिक व शहरी दूषित एवं रसायनयुक्त जल की सुचारू निष्कासन, शुद्धिकरण व्यवस्था की कार्ययोजना बनाये जाने वाली कमेटी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा आपको हार्दिक बधाई।

बैंगलोर– व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 के अरटिया-

कलां चातुर्मास में महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. के संसार पक्षीय बहन-बहनोई मुकेशजी, मीनाक्षीजी ओस्तवाल की सुपुत्री प्रांजल ओस्तवाल बैंगलोर ने 11 वर्ष की छोटी-सी उम्र में मात्र 15 दिन में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया है। आपको संघ की ओर से बहुत-बहुत बधाई।

ह्यिण्डौनसिटी– व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के वर्द्धमान

नगर चातुर्मास में 10 वर्षीय बालिका मोनी जैन सुपुत्री श्री शैलेषजी जैन ने 20 दिन में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर लगभग चार माह स्वयं ने प्रतिक्रमण किया। प्रतिक्रमण के पश्चात् बालिका ने उववाई सूत्र, भक्तामर स्तोत्र तथा पुच्छिस्सुणं भी कण्ठस्थ किया। संघ की ओर से हार्दिक बधाई।

पीपाड़सिटी– श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ संस्थान, पीपाड़सिटी की 01 नवम्बर, 2020 को आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से श्री श्रेणिकराजजी कटारिया (94616-46400) को अध्यक्ष, श्री सुरेन्द्रजी चौधरी को उपाध्यक्ष, श्री नमनजी मेहता (94141-16766) को मंत्री, श्री मनोजजी मुथा को सहमंत्री तथा श्री अशोकजी भण्डारी को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। नव-मनोनीत पदाधिकारियों को संघ की ओर से हार्दिक बधाई।

श्रद्धांजलि

अनन्य गुरुभक्त संघ समर्पित संघ संरक्षक

श्री रतनलालजी बाफना के स्वर्गगमन से संघ में अपूरणीय क्षति

संघ-सेवी, संत-सेवी, संघहितैषी, संघहितचिन्तक, संघरत्न सम्मान से

सम्मानित, रत्नसंघ विभूषण से विभूषित, संघ संरक्षक, शासन सेवा समिति के संयोजक, श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ, उदारमना, सेवाभावी, सुश्रावक श्रीमान् रतनलाल जी सा बाफना के दिनांक 16 नवम्बर 2020 को देहावसान हो जाने से रत्नसंघ में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जैन समाज में अपूरणीय क्षति हुई।

मूल भोपालगढ़ के प्रतिष्ठित बाफना परिवार के कुलदीपक आदरणीय श्री बाफना साहब ने माता-पिता एवं पारिवारिक-परिजनों के प्रदत्त संस्कारों से श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में अध्ययन किया था। पढ़ाई के पश्चात् कमाई और भलाई को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करने का संकल्प लेकर उन्होंने 1950 में व्यापार-व्यवसाय के लिए प्रस्थान किया तो पीछे मुड़कर नहीं देखा। प्रामाणिकता के साथ काम-धंधे में दिन-दूनी-रात चौगूनी गति-प्रगति करते हुए महाराष्ट्र के खानदेश में आपने विपुल यश-कीर्ति अर्जित कर ली। व्यापार के साथ ही विविध सेवाओं में आपकी रुचि आपको विभिन्न आयामों की पुरोधा बना गई।

गुरु हस्ती की भक्ति में पूर्णतः समर्पित गुरु की प्रेरणा से उन्होंने

संघ-समाज को सक्रिय, सक्षम व स्वावलम्बी बनाने का बीड़ा उठाया। भगवान महावीर के सच्चे सिपाही एवं गुरु के श्रद्धाशील भक्त, आपने बालक-बालिकाओं को संस्कारित करने हेतु पूरे महाराष्ट क्षेत्र में धार्मिक गतिविधियों के संचालन में अपना अमूल्य योगदान दिया। अहिंसा, शाकाहार के प्रचार-प्रसार में अपने जीवन को समर्पित करने की भावना से आपने गौ-सेवा, मानव-सेवा हेतु देश-भर में विभिन्न गांव/शहरों में सार्वजनिक कार्यक्रमों में तन-मन-धन से एवं समर्पित भावना से प्रचार-प्रसार के माध्यम से अपनी कार्य-योजना को जन-जन तक पहुंचाने में जो कठिन-कठोर श्रम किया है, वह स्तुत्य है।

आदरणीय बाफना साहब ने अपने 'आर.सी.बाफना ज्वैलर्स' प्रतिष्ठान को जलगांव ही नहीं अपितु पूरे महाराष्ट्र में सफलतापूर्वक प्रतिष्ठापित किया ही, इसके माध्यम से हजारों स्वधर्मी भाईयों तथा जरूरतमंद युवाओं को अपनी आजीविका हेतु रोजगार प्रदान किया। उनके द्वारा उपकृत सभी बन्धु अपने उस धर्मपिता के विदा हो जाने से अनाथ-सा महसूस कर रहे हैं। उनके दर पर आया हुआ कोई भी याचक किसी भी तरह की याचना से खाली हाथ नहीं गया। एक हाथ से दिया हुआ दूसरे हाथ को पता नहीं चले, इस भावना से कई परिवारों के वे पालक थे।

गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय मिशन को घर-घर पहुंचाने में बाफना साहब ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ की पूरे महाराष्ट्र में अपनी पहचान बनाने में आपने विशेष पुरुषार्थ किया। इस युग के यशस्वी-मनस्वी-तपस्वी, प्रतिपल स्मरणीय, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज साहब की सद्सीख ''संघ-सेवा का ख्याल रखना'' गुरु के वचन का प्राण-पण से उन्होंने अपने पूरे जीवन में पालन किया। संघ में विभिन्न विषयों पर निर्णय लेने में आपका मार्गदर्शन सदैव महत्वपूर्ण एवं उपयोगी रहा।

आदरणीय बाफना साहब ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का अध्यक्षीय दायित्व दो कार्यकाल अर्थात् छह वर्ष तक कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। उनके कार्यकाल में सर्वाधिक विरक्त-विरक्ताओं ने संयम-पथ स्वीकार किया, वह अपने-आपमें अनूठी उपलब्धि है। गांव-गांव शहर-शहर में स्वधर्मी बन्धु सामायिक-स्वाध्याय में आगे बढ़े तथा नजदीकी स्थानक में जाकर धर्माराधना कर सके इस हेतु आपने अपनी कर्मभूमि जलगांव में सामायिक-स्वाध्याय भवन की पूर्ति में तो उदारता प्रदर्शित की ही, रत्नसंघ के मुख्यालय जोधपुर सहित देश के कई स्थानों पर सामायिक-स्वाध्याय भवन में मुक्त हस्त से दान देकर लक्ष्मी का सदुपयोग किया।

संघ में विरक्त-विरक्ताओं, वीर परिवारजनों एवं संत-सतियों की सार-संभाल में आपकी सक्रियता प्रेरणादायी थी। संघ-समाज में विद्वानों, साहित्यकारों, लेखकों, कवियों, समाज-सुधारकों, स्वाध्यायियों एवं साधकों का सम्मान बढ़े, एतदर्थ उन्हें समय-समय पर प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते रहते थे। आप रत्नसंघीय शासन सेवा समिति की स्थापना के पश्चात से संयोजक-पद का दायित्व पूरी निष्ठा से निष्पादित कर रहे थे। आदरणीय बाफना साहब जैसी प्रेरणा करते थे, वैसा ही स्वयं भी अपने जीवन में चरितार्थ करते थे। सामायिक-स्वाध्याय, संवर-पौषध, प्रवचन-श्रवण जैसी

प्रवृतियों के परिपालन में वे पूरी तरह सजग थे। रत्नसंघ के अलावा सभी सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों की सेवा-भक्ति में भी वे सन्नद्ध रहते थे, वे कहते थे कि मेरे गुरु हस्ती ने जो मंत्र 'गुरु एक-सेवा अनेक' का दिया, उसी की पालना कर रहा हूं।

संघ के बहुमूल्य रत्न आदरणीय बाफना साहब की निःस्वार्थ सेवाभावना के कारण संघ द्वारा उन्हें वर्ष 2009 में ''संघरत्न'' सम्मान से सम्मानित किया गया। उसके पश्चात् वर्ष 2017 में भी संघ-दीप्ति में महनीय समर्पण के लिए ''रत्नसंघ-विभूषण'' से विभूषित किया गया था। गो-वंश के रक्षण-संवर्धन एवं सेवा में उनकी भूमिका व भागीदारी के परिणाम-स्वरूप भारतीय गोवंश संवर्द्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली की ओर से वर्ष 1995 में आपको 'ऋषभश्री' पुरस्कार प्रदान किया गया। व्यावसायिक प्रामाणिकता के लिए वर्ष 1996 में सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री डा. मनमोहनसिंह जी ने आपको 'जमनालाल बजाज पुरस्कार' प्रदान कर सम्मानित किया। भगवान महावीर फाउन्डेशन, चैन्नई ने वर्ष 1997 में आपको 'महावीर अवार्ड' तो प्रदान किया ही, पांच लाख रूपये की पुरस्कार राशि भेंटकर आपका अभिनन्दन भी किया गया। वर्ष 2001 में तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने आपको 'जैन रत्न' सम्मान से सम्मानित किया। संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा, श्रुत-सेवा, गो-सेवा, मानव-सेवा के क्षेत्र में अनेकानेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं ने समय-समय पर आदरणीय बाफना साहब का स्वागत-अभिनन्दन कर विशेष सम्मान से अलंकृत किया था।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक आदरणीय श्री मोफतराज जी मुणोत एवं आदरणीय बाफना साहब की जोड़ी रत्नसंघ की पहचान गिनी जाती थी। आज हमने उस महान् विभूति को संघ से खो दिया है। उनकी रिक्तता संघ में सदैव महसूस होती रहेगी।

आदरणीय बाफना साहब स्वयं तो संघ-सेवा में पूर्णरूपेण सन्नद्ध रहे साथ ही समस्त पारिवारिक परिजनों को भी सदैव प्रेरणा करते रहे। आदरणीय श्री कस्तुरचन्द जी बाफना ने भाई साहब का परछाई की तरह सदैव साथ दिया। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती नयनताराजी श्राविका मण्डल एवं स्वाध्याय संघ में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान कर रही है। युवारत्न श्री सिद्धार्थजी बाफना ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् में उपाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। श्री सुशील जी बाफना सहित परिवार के सभी सदस्य बाफना साहब के प्रत्येक वाक्य को आदेश मान शिरोधार्य करते थे। उनकी सेवा में परिवार का प्रत्येक सदस्य संलग्न था।

आदरणीय बाफना साहब की स्मृति में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा 19 नवम्बर 2020 को ऑनलाइन जूम एप्प के माध्यम से श्रद्धाजंलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें उनके परिवार सहित संघ के प्रमुख पदाधिकारियों, श्रावक-श्राविकाओं द्वारा संवेदनाएँ प्रकट करने के साथ उनके गुणों को उजागर करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए। सभा में श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया-जोधपुर, श्री कैलाश जी हीरावत-जयपुर, श्री नवरतन सा कोठारी-जयपुर, श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर, श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना-जोधपुर, श्रीमती मंजूजी भण्डारी-बैंगलुरु, श्री चंचलमलजी

बच्छावत-कोलकाता, श्री मनीषजी मेहता-जयपुर, श्री सुभाषजी हुण्डीवाल-जोधपुर, श्री अशोकजी बाफना-चेन्नई, श्री राजेशजी कर्णावट-जोधपुर, श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना-जोधपुर, श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल-बैंगलुरु, श्री श्रीपालजी देशलहरा-हैदराबाद, श्री पदमचन्दजी कोठारी-अहमदाबाद, श्री विजयजी नाहर-इन्दौर, श्री कुशलजी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर, श्री मनमोहनचन्दजी बाफणा-कानपुर, श्री देवेन्द्रराजजी मेहता-जयपुर, श्री नेमीचन्दजी कर्णावट-भोपालगढ़, श्रीमती विजयाजी मल्लारा-जलगांव, श्रीमती मंगलाजी चोरडिया-जलगांव, नेहाजी चोरडिया-जलगांव, श्री कंवरलालजी संघवी-जलगांव, श्री महावीरजी बोथरा-जलगांव, श्री अशोकजी जैन-जलगांव, श्री विमलचंदजी डागा-जयपुर, श्री कस्तूरचन्दजी बाफना-जलगांव आदि ने आदरणीय श्री रतनलाल सा बाफना को श्रद्धाजंलि प्रदान की। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने किया।

अनन्य गुरुभक्त, संघ समर्पित, सुश्रावक श्री जगदीशजी जैन का स्वर्गगमन

अनन्य गुरुभक्त, सेवाभावी सुश्रावक श्री जगदीशजी जैन का दिनांक 23.10.2020 को स्वर्गगमन से संघ-समाज में एक संत-सेवी, संघहितैषी, संघहित-चिन्तक सुज्ञ श्रावकरत्न की भारी कमी हुई है।

सुश्रावक श्री जगदीशजी जैन पिछले कई वर्षो से आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सेवा-सन्निधि में रहकर आचार्यश्रीजी के पत्राचार-समाचार एवं गुरुदेव की आज्ञा-अनुमति से संत-सतीवृन्द तथा श्रावक-श्राविकावृन्द को आवश्यक संकेत संप्रेषित करते रहे हैं। गुरुदेव के संकेत को समझकर समाचार प्रेषण में वे सिद्धहस्त थे। संघ-समाज के पदाधिकारियों के साथ संघ-सेवी सुश्रावकों से उनका निकटता से परिचय था।

सुश्रावक श्री जगदीशजी नित्यप्रति सामायिक एवं संवर-साधना के साथ संघ की प्रवृत्तियों-गतिविधियों और कार्यक्रमों की रिपोर्ट तैयार करके संघ पदाधिकारियों को भेजते। शब्द-वाक्य और भाषा-भाव के साथ लेखन-कला में वे माहिर थे। 27 फरवरी 2003 से 07 जुलाई, 2020 तक दीर्घ अवधि में आचार्यश्री की सेवा-सन्निधि में रहने वाले सुश्रावक श्री जगदीशजी का जीवन सात्विक तो था ही, आचार-विचार-व्यवहार से भी उनकी सहजता झलकती थी। विगत कुछ वर्षो से शारीरिक कमजोरी होते हुए भी वे गुरुचरणों में सेवाभावना से समय का भोग देते रहे। कोसाना से सवाईमाधोपुर जाते वक्त किसी ने यह कल्पना तक नहीं की कि सेवाभावी सुश्रावक पुनः गुरुदेव के दर्शन-वन्दन नहीं कर पायेंगे। कोरोना महामारी से ग्रसित होने पर उपचारार्थ सवाईमाधोपुर एवं तदन्तर जयपुर हॉस्पीटल में भर्ती करवाया गया, लेकिन आयुष्य की डोर कब टूटती है इसका अन्दाज कोई नहीं लगा सकता। होनी होकर रहती है, उसे टाला नहीं जा सकता।

आदरणीय श्री जगदीशजी सच्चे अर्थों में कर्मयोगी थे। गुरु-सेवा, गुरु-भक्ति और गुरु-सान्निध्य में रचा-पचा उनका जीवन सरल, सहज और सात्विक था। घर-परिवार से दूर रहकर भी उनके मन-मस्तिष्क में गुरु-सेवा की भावना के कारण वे समय का भोग देकर सन्तुष्ट रहते। उनके स्वर्गगमन से संघ-समाज में एक होनहार, निष्ठावान और संघ-समर्पित श्रावकरत्न की अपूरणीय क्षति हुई है।आपके सुपुत्र श्री रविन्द्रजी एवं श्री आनन्दजी भी संघ की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

चेन्नई– अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी सुश्रावक श्री भंवरलालजी बोथरा का दिनांक 29 अगस्त, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप आचार्य हस्ती, आचार्य हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के प्रति अनन्य आस्था एवं श्रद्धाभक्ति रखते थे। आपका जीवन प्रारम्भ से ही संघ सेवा के लिए समर्पित रहा था। आपने आचार्य हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक- स्वाध्याय को अपने जीवन में आत्मसात् किया था। हीरादेसर एवं चेन्नई चातुर्मासार्थ एवं शेषवेकाल पधारने वाले सभी संत-सतीवृन्द की सेवा में आप सदैव समर्पित रहते थे। जब भी रत्नसंघीय संत-सती आपके मूल निवास हीरादेसर पधारते थे आप चेन्नई से गांव पधार कर सेवा का लाभ लेते थे। पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का सदुपयोग जीवदया के क्षेत्र में आपने विशेष रूप से किया। अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में भी आपका सहयोग रहता था। आपके सुपुत्र श्री चम्पालालजी, श्री सुगनचन्दजी, श्री रतनलालजी एवं श्री गौतमचन्दजी बोथरा सहित सभी परिवारजन रत्नसंघ की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। कुछ ही समय के अन्तराल से दादा श्री भंवरलालजी बोथरा, पुत्र श्री पुखराजजी बोथरा, एवं पौत्र श्री राजेशजी बोथरा का निधन होना बोथरा परिवार पर वज्र के समान आघात था। लेकिन आप सभी सुज्ञ परिजनों ने इस परिस्थिति में भी धर्म-आराधना निरन्तर जारी रखी, यह आपका धर्म के प्रति रुचि दर्शाता है। सम्पूर्ण बोथरा परिवार संघ की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता है, जिसका हमें प्रमोद है।

जयपुर– संघ समर्पित, श्रद्धानिष्ठ, वरिष्ठ श्रावकरत्न श्री प्रकाशचन्दजी डागा का दिनांक 18 अक्टूबर, 2020 को संलेखना संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप नियमित सामायिक- स्वाध्याय की साधना करते थे तथा प्रत्येक अष्टमी, चतुदर्शी को संवर-पौषध, दया आदि की साधना करते थे। आपने स्वाध्यायी के रूप में भी कई वर्षो तक सेवाएँ प्रदान की। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपने स्वयं ने संस्कारी जीवन व्यतीत करते हुए अपने पारिवारिक जनों को धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था। आपने संघ की विभिन्न संस्थाओं में सेवा प्रदान कर संघ का नाम गौरवान्वित किया। आप स्वाभाविक सहिष्णुता एवं शिष्टाचार के धनी थे। आपसे मिलने वाला आपका मनमोहक बन जाता था। आपमें नैतिकता का संस्कार भरपूर था। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री के रूप में भी आपकी महनीय सेवाएँ रही है। समाधिमरण सौभाग्यशाली श्रावक-श्राविका

ही प्राप्त कर पाते है। समाधिमरण आपकी साधना की उच्च पराकाष्ठा थी। जीवन के अन्तिम क्षणों में भी आप अपनी साधना के प्रति सजग थे। यह आपकी त्याग के प्रति दृढ़ता के भाव प्रदर्शित करता है। आपके लघु भ्राता संघ संरक्षक श्री विमलचन्दजी डागा सहित सम्पूर्ण डागा परिवार संघ की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। आपका पूरा परिवार सामायिक, स्वाध्याय, सेवा और संस्कारों के प्रति समर्पित है।

धनोप– संघनिष्ठ वीरमाता सुश्राविका श्रीमती चांदकंवरजी पाडलेचा धर्मसहायिका स्व.

श्री धनराजजी पाडलेचा का 08 नवम्बर, 2020 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। वीरमाताजी का जीवन धार्मिक प्रवृत्ति से सराबोर तथा संत-सतीवृन्द की सेवा से ओतप्रोत था। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति समर्पित श्राविकारत्न ने अंतिम समय में सजग अवस्था में अपने अंतिम मनोरथ को सफल किया। आप रत्नसंघीय महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा. की सांसारिक मातुश्री थी। सम्पूर्ण पाडलेचा परिवार संघ सेवा में सक्रिय है।

इन्दौर– संघसेवी युवारत्न श्री सिद्धार्थजी चौरड़िया सुपुत्र श्री सुमेरचन्दजी चौरड़िया

सुपौत्र श्री मोहनलालजी चौरड़िया का दिनांक 15 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर सहित समस्त संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति रखते थे। आप हंसमुख एवं मिलनसार प्रवृत्ति के युवारत्न थे। इन्दौर पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहते थे। आप सहित सम्पूर्ण चौरड़िया परिवार संघ की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। आपके पिताश्री श्री सुमेरचन्दजी चौरड़िया संघ के क्षेत्रिय प्रधान सहित अनेक पदों पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। वर्तमान में भी चौरड़िया परिवार लवेरा, इन्दौर, चेन्नई सभी स्थानों पर सक्रिय है। श्री सुमेरजी चोरडिया पूरे मध्यप्रदेश में कई भी सेवा हेतु संघ द्वारा याद करने पर उपस्थित होते हैं, जिसका हमें गौरव है।

चेन्नई– अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी युवारत्न श्री राजेशकुमारजी कर्नावट सुपुत्र श्री

कांतिलालजी कर्नावट का दिनांक 08 अक्टूबर, 2020 को आकस्मिक देहावसान हो गया। युवारत्न श्री राजेशकुमारजी कर्नावट की आचार्य श्री हस्ती, आचार्य श्री हीरा, उपाध्याय श्री मान सहित समस्त संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। संघ-समाज के साथ धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में वे सदैव सक्रिय रहे। पारिवारिक सुंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक संत- सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाले श्री राजेशकुमारजी कर्नावट का जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। केवल वे ही नहीं सम्पूर्ण कर्नावट परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। संत-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों की आतिथ्य-सत्कार में कर्नावट परिवार सदैव तत्पर रहा है। रत्नसंघीय शान्त स्वभावी महासती श्री शांतिकंवरजी म. सा. के सांसारिक वीरभ्राता श्री उगमचन्दजी कर्नावट के आप सुपौत्र तथा महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा. के आप सांसारिक जीजाजी थे।

जोधपुर– संघनिष्ठ, देवगुरु धर्म को समर्पित सेवाभावी श्राविकारत्न श्रीमती रेणुजी भंसाली धर्मसहायिका श्री गौतमराजजी भंसाली, पुत्रवधु स्व. श्रीमती उमरावकंवरजी-

पारसराजजी भंसाली एवं दत्तक पुत्रवधू स्व. श्रीमती पुष्पकंवर-श्री जबरराजजी भंसाली का 22 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। स्वभाव से सरल सभी के प्रति आदर एवं सेवा का भाव होने से आप घर-परिवार एवं समाज में सबकी प्रियपात्र थी। बचपन में प्राप्त माता-पिता के संस्कारों को आगे बढ़ाते हुए ससुराल पक्ष में आचार्य श्री हस्ती की पावन प्रेरणा से आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ी रही। श्राविका संघ की गतिविधियों में भी आप सक्रिय थी। तपश्चर्या में भी आपने 31 उपवास, 15 उपवास, दो बार अठाई तथा अनेक छोटी-मोटी तपस्याएँ की थी। कुछ वर्षों से असाध्य रोग से ग्रसित होने के बावजूद भी आपने वर्ष 2018 में अष्ट प्रहर पौषध की आराधना की। प्रतिकूल परिस्थिति में भी सामायिक-स्वाध्याय एवं चिन्तन में अपना समय व्यतीत करती थी। आपके धर्मसहायक श्री गौतमराजजी भंसाली, सुपुत्र श्री राहूलजी भंसाली संघ-समाज की गतिविधियों में सक्रिय है।

मुम्बई– अनन्य गुरुभक्त, संघ समर्पित, वात्सल्य एवं सेवा की प्रतिमूर्ति श्राविकारत्न

श्रीमती पुष्पाजी भंसाली धर्म सहायिका स्व. श्री विजयराजजी भंसाली एवं पुत्रवधू स्व. श्री कुन्दनमलजी भंसाली का 14 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। आप नियमित 5-6 सामायिक करती थी एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। आप रात्रिभोजन त्याग के साथ साथ पर्व-तिथियों पर हरी का त्याग रखती थी। साधु-संतों की विहार सेवा में आप सदैव तत्पर रहती थी। इचलकरंजी, बैंगलोर, पाली, जोधपुर आदि कई स्थानों पर आप चातुर्मास में चौका लगाकर धर्मध्यान का लाभ लेते थे। आपके सुपुत्र श्री धनपतजी भंसाली ने अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ में मंत्री एवं कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की है तथा वर्तमान में भी रत्नसंघ की समस्त गतिविधियों में आप तथा आपके परिवार का पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है।

अहमदाबाद– अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी, सुश्रावक श्री कन्हैयालालजी हीरण का 13

दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति वाले सुश्रावक का जीवन शान्त, सौम्य एवं सरल था। व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण आपका जीवन प्रेरणादायी था। आप बिलाड़ा एवं अहमदाबाद दोनों स्थानों पर चातुर्मास अथवा शेखेकाल में संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। मणिनगर ढोर बाजार संघ-अहमदाबाद के अध्यक्षीय-पद का दायित्व भी आपने निर्वहन किया तथा यहाँ के स्थानक भवन के निर्माण में अर्थ सहयोग के साथ व्यवस्था में भी सहयोग दिया। बिलाड़ा में कबूतरों के चुग्गे-दाने के लिए आप द्वारा विशेष प्रयास किये गये। जीवदया में आपकी विशेष रूचि थी। वैरागी भाई-बहिनों की सेवा हेतु भी आप सदैव तत्पर रहते थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म .सा. का जहाँ भी चातुर्मास होता, आप कई दिनों सेवा में रहकर गुरुभक्ति में संलग्न रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर– अनन्य गुरुभक्त, संघनिष्ठ श्रावकरत्न श्री राजेन्द्रजी कोठारी सुपुत्र स्व. श्री शीतलसिंहजी कोठारी का दिनांक 13 सितम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। चारित्र सम्पन्न सभी संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी अटूट आस्था थी। आपका जीवन सरल, सहज एवं विनयशीलता से युक्त था। आप संघ- समाज की सभी गतिविधियों में सदैव सक्रिय रहते थे। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती प्रसन्नजी कोठारी श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की गतिविधियों में सक्रिय है।

नागौर– युवारत्न श्री विवेकजी भण्डारी सुपुत्र श्री अजीतराजजी भण्डारी का दिनांक 30 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप संघ-सेवा में समर्पित होने के साथ विनयशील एवं सेवाभावी युवारत्न थे। श्री जैन रत्न युवक परिषद् नागौर में आपकी सक्रिय रूप से सेवाएँ प्राप्त हो रही थी। आपके पिताश्री सहित आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा संचालित सभी गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। नागौर में संचालित संघ की सभी गतिविधियों में आपके परिवार का सक्रिय सहयोग प्राप्त हो रहा है।

चेन्नई– संघसेवी, श्रावकरत्न श्री पुखराजजी बोथरा सुपुत्र श्री भंवरलालजी बोथरा (हीरादेसर) हॉल मुकाम चेन्नई का स्वर्गवास दिनांक 03 अक्टूबर, 2020 को हो गया। श्री बोथरा साहब आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर सहित समस्त संत-सतियों के प्रति आगाध श्रद्धाभक्ति रखते थे। आप निरन्तर सामायिक-स्वाध्याय करते थे। वर्ष 2005 के आचार्यप्रवर के चेन्नई चातुर्मास में गुरुदेव के मुखारविन्द से अपने शीलव्रत ग्रहण किया था। आप तन, मन, धन से संघ को अपना सहयोग प्रदान करते थे। आपके सुपुत्र श्री नितेशजी एवं सुनीलजी बोथरा भी युवक संघ की गतिविधियों से जुड़े हुए हैं।

जोधपुर–अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी युवारत्न श्री अनुजजी बुरड़ सुपुत्र श्री जेठमलजी बुरड़ का दिनांक 05 अक्टूबर, 2020 को सड़क दुर्घटना में आकस्मिक देहावसान हो गया। युवारत्न श्री अनुजजी बुरड़ की सभी संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। संघ-समाज के साथ धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में वे सदैव सक्रिय रहे। आपके श्वसुर श्री दिनेशजी खिंवसरा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र में सह-सचिव का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं।

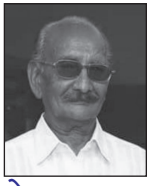

जोधपुर– अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी सुश्रावक श्री शांतिलालजी रांका का दिनांक 07 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्रावक श्री शांतिलालजी रांका का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा था। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावकरत्न थे। जोधपुर एवं पालासनी पधारने वाले संत- सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में आप सदैव तत्पर रहते थे। शक्तिनगर स्थित सामायिक- स्वाध्याय भवन में व्यवस्था

सम्बन्धी कार्यों में आपका अपूर्व सहयोग प्राप्त होता था। आप रत्नसंघीय महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा. के सांसारिक नानाजी थे। आपके तीनों सुपुत्र श्री नरेन्द्रकुमारजी, सुरेन्द्रकुमारजी और पदमकुमारजी का संघ व युवक परिषद् की गतिविधियों में सहयोग प्राप्त होता है। संघ-सेवा, समाज-सेवा तथा स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य सत्कार में भी रांका परिवार सदैव अग्रणी रहा है।

जयपुर– धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री दिनेशकुमारजी जैन सुपुत्र स्व. श्री

धन्नालालजी जैन 'पाटोली वालों' का आकस्मिक स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण किये थे। आपने आजीवन रात्रिभोजन एवं जमीकंद के त्याग के साथ अष्टमी तथा चतुदर्शी को हरी वनस्पति का भी त्याग किया। आप संघ समाज की सेवा के साथ संघ की सभी गतिविधियों में हमेशा सक्रिय रहते थे।

जोधपुर– अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी, सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी चौपड़ा का 07

अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त श्रावक जी का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा था। आपने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के घोड़ों के चौक चातुर्मास में समस्त परिवारजनों सहित धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ लिया। आप घोड़ों के चौक स्थानक में आकर नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। घोड़ों का चौक विराजित संत-सतिवृन्द की गोचरी-पानी की सेवा में सदैव अग्रणी रहे। आप उपाध्यायप्रवर पं. रत्न **श्री मानचन्द्रजी म.सा.** के सांसारिक भानजे थे।

सवाईमाधोपुर– सुश्राविका श्रीमती मोतियाबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री नाथूलालजी

जैन चौधरी का 08 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपने 4 वर्ष तक निरन्तर वर्षीतप करने के साथ समय-समय पर पचोले, तेले, उपवास, आयंबिल, एकासन, पौरसी की तप साधना की। आपने 50 वर्ष पूर्व 4 खंद के नियम लिये थे। आप प्रातः नियमित स्थानक पधारकर सामायिक स्वाध्याय की आराधना करती थी। धार्मिक कार्यो में उत्साहपूर्वक भाग लेती थी। आपके सुपुत्र श्री त्रिलोकजी, सुरेन्द्रजी संघ-सेवा में अग्रणी है।

जोधपुर– अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी, सुश्राविका श्रीमती पुष्पाजी गाँधी धर्मपत्नी स्व.

श्री अन्नराजजी गाँधी का 11 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। विविधगुणों से युक्त सुश्राविका श्रीमती पुष्पाजी गाँधी का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा था। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपने अपने जीवन में अनेकानेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। संत- सतीवृन्द के आहार-विहार तथा सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहती थी। आप श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की कोषाध्यक्ष रही थी। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी गाँधी परिवार सदैव अग्रणी रहा।

जोधपुर– धर्मनिष्ठ,श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री सुमेरचन्द जी सिंघवी सुपुत्र स्व. श्री उम्मेदचन्द जी सिंघवी का 13 अक्टूबर, 2020 को 75 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका जीवन कर्तव्यपरायणता, कर्मठ सेवाभावना, वात्सल्य, विनम्रता, उदारता, दया आदि गुणों से ओतप्रोत था। आप श्रद्धानिष्ठ, सक्रिय एवं सरल प्रवृत्ति के श्रावकरत्न थे। आप धार्मिक एवं सामाजिक कार्यो में सदैव अग्रणी रहने के साथ-साथ संत-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहते थे। आप नियमित रूप से सामायिक, स्वाध्याय एवं धार्मिक पुस्तकों का वाचन करते थे। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आप अपने पीछे भरापुरा परिवार छोड़कर गए है।-मनीष सिंघवी

जोधपुर– संघनिष्ठ, अनन्य, गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सरदारकंवरजी टाटिया धर्मसहायिका स्व. श्री धनराजजी टाटिया का 93 वर्ष की आयु में 13 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। सरल स्वभावी व धार्मिक गुणों से ओत-प्रोत आपका जीवन सदैव सामायिक-स्वाध्याय की साधना, रात्रिभोजन-त्याग तथा पाँचों तिथियों को लीलोती के त्याग के साथ गुजरा। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है। आपके सुपुत्र श्री वर्धमानजी टाटिया सहित सम्पूर्ण परिवार संत-सतियों की सेवा तथा धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहता है।-गणपत सुराणा, एडवोकेट

जोधपुर– संघसेवी सुश्राविका श्रीमती विद्याजी गुलेच्छा धर्मसहायिका श्री सुमेरचन्दजी गुलेच्छा का 51 वर्ष की अल्प आयु में 15 नवम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल-जोधपुर की भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी गुलेच्छा की पुत्रवधू है। रत्नसंघीय विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. की सांसारिक बहिन है। आप स्वभाव से सरलमना, शांत स्वभावी, मिलनसार श्राविकारत्न है। संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा भक्ति है। आप अपने पीछे संस्कारवान परिवार छोड़कर गई है।-धीरज डोसी

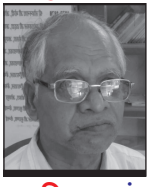

जयपुर– सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर में कार्यरत हमारे कार्यालय सहयोगी श्री प्रदीपजी बंसल (व्यवस्थापक) का 17 नवम्बर, 2020 को आकस्मिक निधन हो गया। आप सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल में लगभग 15 वर्षो से समर्पित भाव से अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। आप स्वभाव से सरल, शान्त प्रकृति के समर्पित व्यक्ति थे। आपकी सुमधुर वाणी से सभी प्रभावित थे।

बजरिया– संघ समर्पित, श्रावकरत्न श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन 'करेला वालों' का 57 वर्ष की आयु में आकस्मिक देवलोकगमन हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक आराधना एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने वाले श्रावक थे। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नित्यप्रति गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन का लाभ लेते थे। आपके सुपुत्र श्री मयंकजी एवं रोहितजी जैन भी संघ की गतिविधियों से जुड़े हुए हैं।

जोधपुर– संघ सेवी श्रावक रत्न श्री प्रसन्नचन्दजी सिंघवी का दिनांक 23 नवम्बर,. 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्य श्री हस्ती, आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी, आपका जीवन सरल, सहज एवं सादगीपूर्ण था। प्रताप नगर क्षेत्र में पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवा भक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे। सिंघवी परिवार संघ सेवा समाज सेवा में सदैव अग्रणी रहा है।

जोधपुर– अनन्य गुरुभक्त संघ सेवी श्रावक रत्न वीर भ्राता श्री राजकुमारजी सिंघवी का दिनांक 30.11.2020 को देहावसान हो गया। आप रत्न संघ के समर्पित एवं सेवाभावी श्रावक रत्न थे। गुरु हस्ती हीरा मान के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आप जोधपुर में नियमित रूप से दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया करते थे। आपका जीवन सरल एवं सहज था। आप रत्न संघीय संत रत्न श्रद्धेय श्री कैलाश मुनिजी म.सा. के सांसारिक भ्राता थे। बारनी एवं जोधपुर दोनों स्थानों पर सिंघवी परिवार संत-सतीवृन्द की सेवा भक्ति दर्शन हेतु पधारने वाले दर्शनार्थियों के आतिथ्य सत्कार में सदैव तत्पर रहता है। आपके भ्राता श्री महेन्द्रकुमारजी सिंघवी, श्री प्रवीणकुमारजी सिंघवी तथा सुपुत्र श्री राहुलजी, रोहितजी सिंघवी, संघ-सेवा में सक्रिय है। आपके भतीजे श्री लोकेशजी बकराशाला बारनी का काम एवं स्थानीय संघ का काम बखुबी निर्वहन कर रहे है। आपका सम्पूर्ण परिवार रत्न संघ की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है।

हैदराबाद– अनन्य गुरुभक्त संघ सेवी श्रावक रत्न श्री हस्तीमलजी गुन्देचा का दिनांक 30.11.2020 को देहावसान हो गया। श्री गुन्देचाजी आचार्य श्री हस्ती, आचार्य श्री हीरा, उपाध्याय श्री मान सहित सभी संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति रखते थे। आप रत्न संघ के समर्पित श्रावक रत्न थे। आपका जीवन सरल एवं सहज था। आप नियमित रूप से स्थानक पधारकर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लेते थे। आपने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हैदराबाद के अध्यक्ष पद का तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के आन्ध्रप्रदेश संभाग के क्षेत्रीय प्रधान का दायित्व बखूबी निर्वहन किया था। आपके अनुज भ्राता श्री शान्तिलालजी गुन्देचा श्री जैन स्वाध्याय संघ, हैदराबाद की गतिविधियों में सक्रियता से जुड़े हुए हैं। आपके सुपुत्र सज्जनजी एवं उत्तमजी गुन्देचा सहित आपका परिवार रत्न संघ की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है।

जोधपुर– संघसेवी श्रावकरत्न श्री पुखराजजी महनोत का 05 दिसम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म. सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। महनोत साहब का जीवन प्रारम्भ से ही संघ सेवा के लिए समर्पित रहा था। आचार्यप्रवर के रेनबों हाउस चातुर्मास में तथा घोड़ों का चौक चातुर्मास में प्राचीन ग्रंथ एवं साहित्य को सुव्यवस्थित करने में आपकी सक्रिय सेवाएँ रही थी।

संघ ने जो भी दायित्व आपको प्रदान किया, तत्परता के साथ उसे आपने निभाने का प्रयास किया। संघ सेवा के प्रति आपका समर्पण प्रेरणादायी रहा। आप रत्नसंघीय श्रद्धेय श्री मगनमुनिजी म.सा. के सांसारिक वीर पुत्र थे। आपने साहित्य सर्जन, साहित्य लेखन एवं महापुरुषों के प्रवचनों का वर्षों तक सम्पादन किया। संघ-समाज के प्रति आपकी सराहनीय सेवाएँ रही।

अहमदाबाद– अनन्य गुरुभक्त संघसेवी, उदारमना, श्रावकरत्न श्री छोगालालजी

बाघमार के 07 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर सहित मुनिमण्डल के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आप संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदैव तत्पर रहते थे। आपने वर्षों तक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ अहमदाबाद के अध्यक्षीय पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया। आप राजस्थान उपाश्रय के ट्रस्टी, महावीर एज्युकेशन सोसायटी के अध्यक्ष, सोशल कॉपरेटिव बैंक के डायरेक्टर सहित अनेक सामाजिक संस्थाओं के मानद् पदाधिकारी रहें। आप स्वयं ने तन-मन-धन से सभी संस्थाओं को सहयोग प्रदान किया। आपके दोनों सुपुत्र श्री मुकेशजी एवं भरतजी संघ में सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

चेन्नई– धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री आनन्दमलजी चोरडिया सुपुत्र स्व. श्री सायरमलजी

चोरडिया का 31 अक्टूबर, 2020 को देहावसान हो गया। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति पूर्णतः समर्पित श्रावकरत्न शान्त, सरल व हंसमुख व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. तथा महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के चेन्नई चातुर्मासों में उन्होंने अपूर्व लाभ प्राप्त किया। वे चेन्नई की अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं में सक्रिय थे। आपकी धर्म सहायिका श्रीमती विमलाजी चोरडिया स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करती है। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री पी.एम. चोरडिया एवं डॉ. चंचलमलजी चोरडिया के आप भतीजे थे।-शेखर चोरडिया

इन्दौर– अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी सुश्रावक श्री त्रिलोकचन्दजी लुणावत का 07

दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्रावक श्री तिलोकचन्दजी लुणावत का सम्पूर्ण जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा., परम श्रद्धेय आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव अग्रणीय रहने वाले लुणावतजी का जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि सद्गुणों से युक्त था। आप प्रतिदिन सामायिक-साधना की आराधना करते थे तथा आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान अंगीकार कर रखे थे। संघ द्वारा संचालित सभी गतिविधियों में लुणावत परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है। आपने गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी के रूप में भी अपना दायित्व बखूबी निर्वहन किया। इन्दौर क्षेत्र में पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में लुणावत परिवार

पूर्ण रूप से सन्नद्ध रहते थे।

जोधपुर– संघसेवी सुश्राविका श्रीमती पुष्पादेवीजी रांका धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनराज जी रांका का 08 दिसम्बर, 2020 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति समर्पित श्राविकारत्न का जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि सद्गुणों से युक्त था। पावटा, शक्तिनगर चातुर्मास में तथा शेखेकाल में संत-सतीवृन्द की सेवा में पधारकर साधना-आराधना करने में श्राविकारत्न अग्रणी थी। आपके सुपुत्र श्री लाड़ेशजी रांका संघ की जोधपुर शाखा के उपाध्यक्ष पद का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं तथा श्री सिद्धकुमारजी एवं श्रेणिकुमारजी भी संघ-सेवा में सक्रिय है।

जयपुर– अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री राजेन्द्रकुमारजी पटवा का 08 दिसम्बर, 2020 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। संघनिष्ठ सुश्रावक पटवा साहब गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति रखते थे। संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में वे सदैव तत्पर रहते थे। जयपुर में रत्नसंघीय संत-सतीवृन्द के चातुर्मास में आपकी महनीय सेवाएँ प्राप्त होती थी। आदरणीय पटवा साहब ने वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की थी। आप स्वाध्याय संघ शाखा जयपुर के वर्षो तक संयोजक रहें। साथ ही गुरु हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-संघ के संचालन में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थी। आपके सुपुत्र युवारत्न श्री रितुलजी पटवा वर्तमान में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

विजयनगर– धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कैलाशचन्दजी बुरड़ का 21 नवम्बर, 2020 को 67 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करते थे। संघनिष्ठ सुश्रावक बुरड़ साहब गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति रखते थे। संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में वे सदैव तत्पर रहते थे एवं समय-समय पर सपरिवार गुरु दर्शन-वंदन का लाभ लेते रहते थे। आप अपने पीछे धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती सुशीलादेवीजी बुरड़, दो सुपुत्र एवं एक सुपुत्री सहित भरा पुरा परिवार छोड़कर गये है।

भण्डारा– सुश्राविका श्रीमती चन्द्रमालाजी गांधी का 06 दिसम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति समर्पित श्राविकारत्न ने अपने जीवन में विविध त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप स्व-कल्याण हेतु प्रतिदिन सामायिक- स्वाध्याय की आराधना में सजग थी।

जयपुर– धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नन्दलालजी हीरावत सुपुत्र स्व. श्री नवरतनमलजी हीरावत का 63 वर्ष की आयु में 08 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। आपकी गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप धर्मपरायण श्रावकरत्न थे। आप सरल, सरल, करुणाशील व्यक्तित्व के धनी थे। आप अपने पीछे श्रद्धानिष्ठ धर्मसहायिका श्रीमती मंजुजी हीरावत सहित धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गये है।

जयपुर– धर्मनिष्ठ वरिष्ठ सुश्रावक श्री सौभाग्यमलजी जैन (समिधि वाले) का 84 वर्ष की उम्र में 14 नवम्बर, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन अत्यन्त सरल, उदारमय था। आपश्री के सामायिक, उपवास, एकासन, रात्रि भोजन, जमीकंद आदि के त्याग थे। आपने शीलव्रत भी ग्रहण कर रखा था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान एवं धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गये है।

फत्तेपुर– सुश्रावक श्री मांगीलालजी रांका का 75 वर्ष की आयु में स्वर्गगमन हो गया। आप स्वभाव सरल, सहज एवं उदारहृदय श्रावकरत्न थे। आपकी गुरु हस्ती-हीरा-मान एवं प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं। आपके सुपुत्र श्री विजयकुमार जी रांका स्वाध्यायी के रूप में अपनी महती सेवाएँ दे रहे हैं।

चौथ का बरवाड़ा– धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गिरराजप्रसादजी जैन (चौधरी) सुपुत्र श्री चौथमलजी जैन चौधरी का दिनांक 31 अगस्त, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप सहज, सरलस्वभावी एवं समर्पित श्रावकरत्न थे। आप प्रतिदिन स्थानक में पधार कर सामायिक-स्वाध्याय की साधना करते थे। आपके सुपुत्र श्री महेन्द्रजी, कुशलजी एवं नवरत्नजी जैन भी संघ की गतिविधियों से जुड़े हुए हैं।

देई (बूंदी)– संघसेवी श्रावकरत्न श्री पदमचन्दजी जैन का दिनांक 29 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर सहित समस्त संत-सतियों के प्रति श्रद्धाभाव रखते थे। आप नियमित स्थानक पधारकर सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। देई पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे।

कोटा– सुश्राविका श्रीमती चमेलीजी जैन धर्मसहायिका श्री प्रहलाद जी जैन (गलवानिया वाले) का 11 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करती थी। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। संत-सतीवृन्द की सेवा में भी आप सदैव तत्पर रहती थी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्राप्त साभार

44895/-श्रीमती सरलाजी शान्तिलालजी सुराणा, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

32120/-श्री राजीवजी, पृथ्वीजी, काश्वीजी सुराणा, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

29200/-श्री संदीपजी, लीलमजी, रचितजी, जयवीरजी सुराणा, चेन्नई।

22000/-श्री प्रवीणकुमारजी, मनोजकुमार, रक्षिताजी, शैलेषजी, सिद्धार्थजी संकलेचा, कुम्भकोणम (चेन्नई)-जोधपुर, चातुर्मास-2020 रत्नम् प्रकाशन में सहयोगार्थ।

11000/-श्री नरेशचन्दजी, धमेन्द्रजी, कुलदीपजी, शीतलजी, तुसालजी, गुणवन्त जी

भण्डारी, मकराणा-नागौर, स्व. श्री शिखरचन्दजी भण्डारी की पुण्यस्मृति में जीवदया हेतु।

8000/- श्री रविजी मेहता, श्रीमती प्रज्ञाजी, श्रीमती नीतूजी, श्रीमती पुष्पाजी मेहता, पाली-मारवाड़, संघ सहयोगार्थ।

5100/- श्रीमती सूरजकंवरजी, अमितजी बोहरा, ब्यावर, स्व. श्री अमरचन्दजी बोहरा की पुण्य स्मृति में जीवदया हेतु।

5000/- श्रीमती उर्मिलाजी सिंघवी, जोधपुर, स्व. श्री अचलमलजी सिंघवी की पुण्यस्मृति में जीवदया हेतु।

3100/- श्री हेमचन्द्रजी रांका, जयपुर, संघ सहायतार्थ।

2100/- ओसवाल संघ, दुणी (टोंक), स्वाध्याय संघ हेतु सहयोगार्थ।

2100/- श्री गौतमराजजी, राहुलजी भंसाली, जोधपुर, संघ सहयोगार्थ।

1100/- श्रीमती प्रेमलताजी धर्मसहायिका श्री सोहनलालजी जीरावला, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री शांतिलालजी डाकलिया, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री रविकुमारजी जैन, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री गणपतराजजी, लखपतराजजी, सुरेशजी, अमितजी चौपड़ा, जोधपुर, श्रावकरत्न श्री प्रकाशचन्दजी चौपड़ा सुपुत्र श्री सोनराजजी चौपड़ा का 08 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में जीवदया हेतु।

1100/- श्री जौहरीमलजी, जसवन्तराजजी, गजराजजी छाजेड़, जोधपुर, कंवर साहब श्रावकरत्न श्री प्रकाशचन्दजी चौपड़ा सुपुत्र श्री सोनराजजी चौपड़ा का 08 अक्टूबर, 2020 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में जीवदया हेतु।

1100/- श्री दिनेशजी, क्षमेन्द्रजी खिंवसरा, जोधपुर, कंवरसाहब श्री अनुजजी बुरड़ के स्वर्गवास होने पर उनकी पावन पुण्यस्मृति में जीवदया हेतु।

1000/- श्री मोहनलालजी जीरावला, जोधपुर एवं श्रीमती विमलाजी जीरावला के ब्रह्मचर्य व्रत के 30 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जीवदया में।

500/- श्री पुखराजजी मुणोत, जोधपुर, जीवदया हेतु।

250/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोसाणा, संघ सहयोगार्थ।

200/- श्रीमती रीताजी जैन, कोलकाता, संघ सहयोगार्थ।

200/- श्रीमती राजकुमारजी जी बुरड़, जोधपुर, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

100000/-श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल एटोर्निज, चेन्नई, ''स्वाध्यायी मंजूषा'' पुस्तक के पुनः प्रकाशन में सहयोग।

21000/- कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट,जोधपुर,स्वाध्याय निधि पौषक सदस्य हेतु।

21000/- श्री जौहरीमलजी, जसवन्तराजजी, गजराजजी चाम्बड़, जोधपुर, स्वाध्याय निधि पौषक सदस्य हेतु।

21000/- श्री छोटमलजी लाड़कंवर नवरतन सुमन डागा चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, स्वाध्याय निधि पौषक सदस्य हेतु।

11000/- श्री महावीरचन्दजी, मनोजजी, कमलेशजी बाफना, सूरत, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री राजमलजी संचेती, अमलनेर(महा.) अपने पूज्य पिताजी श्री मोहनलाल जी संचेती एवं मातुश्री श्रीमती चांदाबाईजी संचेती दोनों के संथारा स्मरणार्थ भेंट।

5100/- श्रीमती मोहनकौरजी जैन, जोधपुर, वार्षिक सदस्यता एवं सहयोग।

5100/- श्री राधेश्यामजी, कुशलचन्दजी, पदमचन्दजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री मुकेशजी, विमलजी, राजेशजी जैन 'पानवाले', बजरिया- सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री गणपतलालजी, मनोजजी, मनीषकुमारजी जैन 'धनोली वाले', बजरिया-सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री रतनलालजी, रविकांतजी, विजयकांतजी लोहिया 'एण्डवा वाले', बजरिया-सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री सुबाहूकुमारजी, मनोजकुमारजी, मनीषकुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री महेन्द्रकुमारजी, शुभमकुमारजी जैन, श्यामपुरा, सवाईमाधोपुर-मुम्बई, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्रीमती चमेलीदेवीजी संतोषदेवीजी सर्राफ, बजरिया-सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

2100/- श्री देवेन्द्रनाथजी, लोकेन्द्रनाथजी मोदी, जोधपुर, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री दिलखुशराजजी मेहता, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्रीमती हेमलता मदनलालजी सांखला, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री महेन्द्रराजजी मेहता, जोधपुर, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री नरेन्द्रराजजी भण्डारी, बैंगलोर, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री सूरजजी बोहरा धर्मपत्नी श्री राजेशजी बोहरा,जोधपुर,वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री धनपतमलजी मेहता, जोधपुर, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री पी. एम. सा चोरडिया, चेन्नई, आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष एवं स्वाध्याय संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर।

2100/- श्रीमती अकलकंवरजी मोदी, जोधपुर वार्षिक सदस्यता हेतु।

1100/- श्री रोहितकुमारजी किशोरजी लुंकड़, जलगांव (महा.), आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी एवं स्वाध्याय संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर।

1100/- श्री रामलक्ष्मण जी कुम्भट, जोधपुर, अपने पूज्य पिताश्री श्री मगराजजी कुम्भट की 24 वीं पुण्यतिथि एवं भ्राता श्री महावीरराजजी कुम्भट की 19 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर।

500/- श्री तेजमलजी जैन, इन्दौर, अपने सुपौत्र चि. कविश जैन का शुभविवाह 30 नवम्बर, 2020 को सानन्द सम्पन्न होने पर।

अ.भा. श्री जैन रत्न आ. संस्कार केन्द्र को प्राप्त साभार

100000/-श्री प्रवीणकुमारजी संकलेचा, कुम्भकोणम्, सहयोगार्थ।

4000/- श्रीमती चित्राजी, योगेशजी जैन, पाली, सहयोगार्थ।

4000/- श्रीमती श्वेताजी-प्रदीपजी कटारिया, पाली, सहयोगार्थ।

1100/- श्री दिनेशजी, क्षमेन्द्रजी खिंवसरा, जोधपुर, अपनी मातुश्री पूज्य बुद्धकंवर जी धर्मपत्नी श्री जवरीमलजी खिंवसरा की 10.11. 2020 को पावन पुण्य स्मृति में।

गजेन्द्रनिधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

(माह जुलाई-अगस्त-सितम्बर-अक्टूबर-नवम्बर-2020 के लाभार्थी)

100000/- प्रो. (डॉ.) सुशीलाजी विजयकुमारजी सांखला, चालीसगांव, सहयोगार्थ।

100000/- श्री विजयजी जतिनजी नाहर, श्रीनगर-इन्दौर, सहयोगार्थ।

50000/-	श्री अमरचन्दजी जैन (सेवानिवृत्त आर.ए.एस.), जयपुर, सहयोगार्थ।
36000/-	श्री विरेन्द्रजी, संजयजी, दिपकजी सुराणा, मुम्बई, सहयोगार्थ।
24000/-	श्री रविजी मेहता, जोधपुर, सहयोगार्थ।
21000/-	श्रीमती रेशमदेवीजी मेहता, चालीसगांव, सहयोगार्थ।
12000/-	श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, सहयोगार्थ।
12000/-	श्रीमती सीमा मनीषजी कोठारी, जयपुर, सहयोगार्थ।
12000/-	श्री हीरालालजी राजमलजी मंडलेचा, जलगांव, सहयोगार्थ।
12000/-	मैसर्स अनिल डी. डोसी एण्ड कम्पनी, बोरीवली-मुम्बई, सहयोगार्थ।
11000/-	युवारत्न श्री विशालजी जैन सुपुत्र श्रीमती कमलेशजी जैन, मांगरोल-बांरा (राज.), सहयोगार्थ।
6000/-	श्री विजयराजजी विपिनजी बाफना, ठाणे (महा.), सहयोगार्थ।

आगामी पर्व

मार्गशीर्ष शुक्ल 8	मंगलवार	22.12.2020	अष्टमी
मार्गशीर्ष शुक्ल 11	शुक्रवार	25.12.2020	मौन एकादशी
मार्गशीर्ष शुक्ल 14	मंगलवार	29.12.2020	चतुर्दशी एवं पक्खी पर्व
पौष कृष्ण 8	बुधवार	06.01.2021	अष्टमी
पौष कृष्ण 10	शुक्रवार	08.01.2021	भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक
पौष कृष्ण 14	मंगलवार	12.01.2021	चतुर्दशी एवं पक्खी पर्व
पौष शुक्ल 8	गुरुवार	21.01.2021	अष्टमी
पौष शुक्ल 14	बुधवार	27.01.2021	चतुर्दशी एवं पक्खी पर्व। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 111 वां जन्मदिवस

BOOK PACKETS CONTAINING PERIODICALS Value of Periodical From Rs.1/- to Rs.20/- For First 100 gms or part thereof Rs. 2/-

संघ सम्बन्धी
नवीनतम जानकारी
हेतु डाउनलोड करें

रत्नसंघ

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

एप् में अपनी
प्रोफाईल
अवश्य अपडेट करें

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक धनपत सेठिया द्वारा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.) से प्रकाशित, सम्पादक-प्रकाश सालेचा एवं इण्डियन मैप सर्विस, सेक्टर-जी, राममन्दिर के पास, शास्त्रीनगर, जोधपुर से मुद्रित

Contact No. 0291-2636763, 94610-26279 (WhatsApp)
Website- www.ratnasangh.com, Email : absjrhssangh@gmail.com

इस अंक का सौजन्य- गुरुभक्त संघनिष्ठ श्री कनकराज जी महेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, मुम्बई